सदीनामा

सोच में इजाफे की पत्रिका www.sadinama.in SRFTJ : 2454-2121

वर्ष-18 ❑ अंक - 4 ❑ 1 से 31 मार्च, 2018 ❑ पृष्ठ- 28 RNI No. WBHIN/2000/1974 ❑ मूल्य - 5.00 रूपये

क्या आपको याद है अन्ना का आन्दोलन ?

भारत सहित दुनिया के लगभग सभी देशों में भ्रष्टाचार एक बड़ी समस्या है। सन् 2011 में भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक बड़ा आन्दोलन खड़ा हुआ था, जिसके अन्तर्गत जनलोकपाल की नियुक्ति की मांग को लेकर दिल्ली के जंतर-मंतर पर लंबे समय तक धरना भी दिया गया था। इस आन्दोलन का मूल स्वर कांग्रेस-विरोधी था। हाँ. बीच-बीच में संतुलन बनाए रखने के लिए भाजपा का नाम भी ले लिया जाता था। इस आन्दोलन के नेता अन्ना हजारे को दूसरे गाँधी की पदवी दी गई थी। उस आन्दोलन के दौरान दिल्ली के वर्तमान मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, अन्ना हजारे के प्रमुख सिपहसालारों में से एक थे। उस समय के केजरीवाल के लिए जनलोकपाल की नियुक्ति सबसे बड़ा मुद्दा थी, मानो इस नियुक्ति के होते ही भ्रष्टाचार देश से इस तरह गायब हो जायेगा जैसे गधे से सिर से सींग। उस समय पुद्दुचेरी की वर्तमान उपराज्यपाल किरण बेदी भी मंच से हुंकार भर रही थीं। इस आन्दोलन से जो दो अन्य दो प्रमुख व्यक्ति जुड़े हुए थे वे थे पतंजलि उत्पाद श्रृंखला के मालिक बाबा रामदेव एवं श्री श्री रविशंकर। यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है आज कि इन सबने एकदम चुप्पी साध रखी है। ऐसा लग रहा है कि मानो देश से भ्रष्टाचार का खात्मा हो गया हो।

इस आन्दोलन से देश में इस हद तक जुनून पैदा कर दिया था कि लोग अपने हाथों पर 'मेरा नाम चोर है' लिखवाने लगे थे। पीछे पलटकर देखने से अब ऐसा लगता है कि इस आन्दोलन का प्राथमिक और एकमात्र लक्ष्य कांग्रेस को निशाना बनाना था। कांग्रेस के शासन काल में सत्यम कम्प्यूटर्स के राजू की गिरफ्तारी हुई थी। 2जी घोटाले का खुलासा होने पर कई मंत्रियों को अपने पद गँवाने पड़े थे। हाल में एक अदालत ने जो निर्णय दिया है, उससे यह स्पष्ट है कि 2जी घोटाला कभी हुआ ही नहीं था। जो लोग उस समय कांग्रेस को कटघरे में खड़ा करने में कोई कसर बाकी नहीं रख रहे थे, वे अब सत्ता के शीर्ष पर हैं और अदालत ने 2जी घोटाले की हवा निकाल दी है।

परन्तु यह सब अतीत है। ऐसा कहा जाता है कि जनता की याददाश्त कमजोर होती है। कांग्रेस को भ्रष्टाचार के मुद्दे पर जमकर बदनाम करने के अभियान के अगुआ अब अपनी राजनीति और अपने व्यवसाय को चमकाने में व्यस्त हैं। वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, जिन्होंने कांग्रेस-विरोधी लहर का पूरा लाभ उठाया, ने सन् 2014 के आम चुनाव के दौरान जो जुमले उछाले थे। पहला था 'न खाऊँगा न खाने दूंगा' और दूसरा कि 'जनता उन्हें देश का चौकीदार बनने का मौका दे'। मोदी की प्रचार मशीनरी ने सफलतापूर्वक जनता को यह विश्वास दिला दिया कि मोदी जी जो कुछ कह रहे हैं, वे ठीक वैसा ही करेंगे।

अब देश पर नीरव मोदी का भूत सिर चढ़कर बोल रहा है। हीरों के ये व्यापारी, जो दावोस में मोदी के ठीक पीछे खड़े थे, बैंकों के 11,300 करोड़ रूपये लूटकर छूमंतर हो गए हैं। सरकार उन्हें ढूँढ़ नहीं पा रही है। नीरव मोदी ने यह लूट बहुत चतुराई से

शेष पृष्ठ 23 पर

❑ सम्पादकीय ❑

आओ, सीरिया, सीरिया खेलें—

हाल में ही भारतीय मीडिया पर एकनामचीन हस्ती की मौत की घटना की खबर छाई रही, इस पूरी मीडिया कवायत में सीरिया संघर्ष की खबरें दब गयीं। सीरिया संघर्ष, शीत युद्ध के बाद की स्थिति से उत्पन्न हुआ है। रूस के विखण्डन से दुनिया जिस तरह ध्रुवीय हो गई थी, रूस हाशिये पर था और अमेरिका सबसे आगे। यह संघर्ष दूसरे विश्वयुद्ध से कम भयानक पर शीत युद्ध से खतरनाक है। पिछले बीस वर्षों में बने नये से नये हथियारों की टेस्टिंग जमीन बन रहा है' सीरिया। दूसरे और पहले विश्वयुद्ध के बीच तुर्की की खिलाफत व पतन अंग्रेजों द्वारा खिलाफत को समाप्त करना भी इस युद्ध में फिर से आगे आ रहा है। युद्ध का तीसरा पक्ष है आईएसआई के लड़के जिनके लिए खिलाफत ही सब कुछ है और आईएसआई का प्रमुख मुस्लिम जगत का स्वयंम् खलीफा। अब अन्य मोर्चों में पहला सीरिया सरकार, दूसरा विद्रोही और तीसरे कुर्द गुरिल्ले। इस युद्ध में बड़ी शक्तियाँ रूस और अमेरिका शामिल हैं और यह उनके हथियारों की प्रवसी वार है। जब तालिबान के लड़ाके तोप से बामियान के बुद्ध को तोप से उड़ा रहे थे तब इन देशों को विश्वविरासत की कोई चिन्ता नहीं थी क्योंकि अफगानिस्तान में रुसी पिट चुके थे और अमेरिका के पास बंदूक तो थी कोई कंधा उपलब्ध नहीं था। सीरिया में कंधे हैं, रूस को अपने को महाशक्ति साबित कर अपना गौरव पाना है।' मुस्लिम चरमपंथियों के पास नये खलीफा के रूप में एक बगदादी मौजूद है।' किसी को बहिश्त जाना है, किसी को महान जिद्ध करना है किसी को हथियारों की मारक क्षमता जाँचनी है। इंसानियत या मानवीयता बड़ी अच्छी चीजें हैं पर जिम्मेदारी हम सबकी है।

कौन-कौन खिलाड़ी हैं सीरिया में

सन् 2000 में वशर-अल असद अपने पिता हफज-अल-सद के तीस साल के शासन काल के बाद सत्ता में आवे 2015 तक पश्चिमी देशों को सीरिया की कोई चिन्ता नहीं थी। रूस और ईरान ने आसाद को समर्थन किया। असर का समर्थन लेबनान की मिलिसिया कर रही है हिजबुल्लाह जिसके हजारों लड़के मारे जा चुके हैं।

अमेरिका : विद्रोही ग्रुप जो असाद और आईएसईएस के खिलाफ लड़ रहा है। अमेरिका इस ग्रुप के साथ है।

कुर्द :- सीरिया के लड़ाकों को तुर्की समर्थन दे रही है।

तुर्की :- आसाद के खिलाफ तुर्की लड़ाकों को समर्थन दे रही है।

सउदी अरब :- असाद के खिलाफ समूह को समर्थन

कतर तथा जार्डन : अरब राष्ट्रों के साथ आइएसआईएस तथा असाद के खिलाफ

अल कायदा - ईराक के अल कायदा ने सीरिया में घटती घटनाओं का फायदा उठाने की सोची कई यह समूहों में बटा जिसमें इस्लामिक स्टेट इन ईराक एण्ड सीरिया (आईएसआईएस) एक है।

आईएसआईएस : इसके प्रमुख है अबु बक्र-अल-बगदादी विद्रोही ग्रुप: विद्रोहियों और सीरिया के फौज के भगौड़ों ने मिलकर बनाया समूह।

इन सारे समूहों के पीछे बड़ी सरकारें हैं। खिलाफत का झण्डा बुलंद करती बगदादी की फौज है' कुर्द गुरिल्ले हैं, असद को हटाने पर आमादा विद्रोही है तथा कई तरह के अपराधी है, हथियारों के व्यापारी और वे सभी हैं जो कभी न कभी लड़ने का बहाना खोजते हैं। यह बिना किसी एजेंडे का युद्ध है हथियारों की नुमायश है और यह नये तरह का शीत युद्ध है। रूस अपने नये तरह के वायुयानों से बंबिंग कर रहा है रासायनिक हथियारों का प्रयोग जारी है। अमेरिका और रूस ही क्यों चीन की फौजें और उत्तर कोरिया के हथियार। तकनीकी भी दिख रही है। ऐसे समय में हम सिर्फ अपने सीमित नहीं रह सकते हैं।

जितेन्द्र जितांशु

गजल

हरदीप बिरदी, 9041600900

खुदा से माँग दुआ ऐसी जिन्दगी दे दे।
किसी के वास्ते जो अपनी हर खुशी दे दे।।

करे जो दूर अंधेरा, दिल-ओ-दिमाग़ों से।
खुदा तू ऐसी मुझे, कोई रोशनी दे दे ।।

मिरे हबीब का हर पल हो ज़िक्र होठों पर।
ऐ मेरे कल्ब मुझे ऐसी बंदगी दे दे।।

तिरे बदन की महक से महक उठे कमरा।
तू ऐसे मौके भी मुझको कभी कभी दे दे।।

संवार दे जो मिरी उजड़ी ज़ीस्त के गेसू।
हयात मेरी मुझे ऐसी खुशदिली दे दे।।

वो दौड़ा आए मेरे गम की हर खबर सुनकर।
ऐ मेरे प्यार उसे इतनी बेकली दे दे ।।

भरोसा कर के मुझे सौंप दे तू दिल बिरदी।
गमों का बोझ मुझे अपना तू सभी दे दे ।।

दंगों की रजत जयन्ती पर

दंगों के खिलाफ उठे नन्हें-नन्हें हाथ

–घनश्याम अग्रवाल (हास्य-व्यंग्य कवि)
अलसी प्लांट्स, अकोला-444001, 09422860199
Hasya Kavi Ghanshyam Agrawal
agrawal@gmail.com

आदमी की मति
मारी गई और
दंगा हो गया,
हमाम में तो वह था ही
अब सड़क पर भी
नंगा हो गया।
—000—
जब कभी
तेरा या मेरा बच्चा
रोया,
तो मंदिर - मस्जिद
दोनों ढह गए
गोया।
—000—
दो दिन का भी
अनाज तक नहीं
जिनके यहाँ हैं,
उन्हें तो पता ही नहीं
कि बाबर कौन था
अयोध्या कहाँ है ?
—000—
इसकी लुटी बेटी
उसकी लुटी
बहू,
आदम की औलाद
तुझ पर
थूं।
—000—
जब तलक हवाओं में
जली- अधजली लाशों की
गंध घुली है,
कौन कह सकता है
किसकी कमीज किससे
ज्यादा धुली है ?
—000—
था मेरी दुकान का
या कि धुआँ
तेरे मकान का,
मुँह तो काला
हो ही गया,
आसमान का।
—000—
हमने
अंधेरे में
कई घर जलाएँ
मगर
रोशनी
कहाँ ढूँढ पाए?

कहानी

पप्पू पास हो गया

प्रतीप दीक्षित
एम जी एच 2/33, सेक्टर एच,
लखनऊ 226 021
मो॰ - 09956398603

पीयूष को लगता मम्मी-पापा अभी भी उसे बच्चा समझते हैं। अक्सर पप्पू कह जाते। वह कुनमुना कर रह जाता। उसने तो ध्यान ही नहीं दिया था। पप्पू तो दादा-दादी भी, जब कभी गाँव से आते, कहते। लेकिन उसे खराब न लगता। उनके साथ वह ज्यादा ही खुश रहता। कहानियाँ सुनता, उनके पास सो भी जाता। वे मम्मी-पापा की तरह सीधे बैठो, किताबें जगह पर रखो, यह मत खाओ, वह मत खाओ, कभी नहीं टोकते। कभी कभी मम्मी जरूर बुदबुदातीं - इसकी आदतें बिगाड़ कर रख देंगे।

अचानक उसे महसूस हुआ - यह भी कोई नाम है। उसे टी॰ वी॰ पर देखा विज्ञापन याद आ गया, 'पप्पू पास हो गया।' उसने मम्मी-पापा से एतराज जताया, 'आप लोग मेरा सही नाम क्यों नहीं लेते?'

वे हँसे, सही नाम लेने का वायदा किया। लेकिन फिर भी बीच-बीच में भूल जाते हैं। आखिर वह छठवीं कक्षा में आ गया है। अगले जन्म दिन पर ग्यारह का हो जायेगा। अभी तक तो वह मम्मी - पापा के बेड पर उनके साथ ही सोता था। अब उनके बगल में उसका छोटा सा बेड हो गया है। पापा ने तो कहा था - पप्पू (फिर वही पप्पू!) बड़ा हो गया है। उसे अपने कमरे में सोना चाहिए। लेकिन मम्मी ने मना किया - अभी छोटा है। उसे रात में अकेले डर लगेगा।

रात में सोने के पहले, या बीच में नींद खुलने पर वह सुनता, कभी मम्मी-पापा हंसते होते। वह खुश हो जाता। लेकिन ऐसा कम ही होता। अक्सर परेशान लगते-कार की किस्त, पप्पू की फीस, ट्यूशन की चिन्ता। एक बार मम्मी पापा से कह रही थीं- अब तो इतने दिन हो गए हैं। पप्पू अकेले उदास रहता था। यदि कोई बहन या भाई होता! क्या हम....। बहन-भाई की बात को उसकी समझ में तो आता, लेकिन वह उदास हो जाता। वह कहना चाहता - पापा, आप चिन्ता न करें। मैं जब बड़ा हो जाऊँगा, तब सब ठीक हो जायेगा। वैसे भी उसे कार से स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता। पापा को सुबह जल्दी उठकर छोड़ने जाना पड़ता। कभी कभी वे झुंझला भी पड़ते। वह खुद ही स्कूल साइकिल से जाना चाहता था। प्रवीण, सोनू भी तो साइकिल से ही आते हैं। लेकिन पापा को यह पसन्द नहीं। पहले वह हर आने वाले मेहमान के सामने स्कूल की प्रशंसा के पुल बाँध देते थे। इतना नामी स्कूल, मंहगी फीस,किताबें, पढ़ाई का स्तर, अनुशासन। एडमीशन होना ही मुश्किल होता है। कितनी कोशिश करनी पड़ी थी। लेकिन अब तो वह स्कूल को लेकर भी भुनभुनाते रहते हैं। उस दिन रात में, वह सोया नहीं था, पापा मम्मी से कह रहे थे – अब स्कूल वह नहीं रह गया। ऐरे गैरों के प्रवेश भी हो गए हैं। बड़े, छोटे में कोई अन्तर ही नहीं रह गया है। पीयूष को याद आया। पिछली पैरेंट्स-टीचर्स मीटिंग में अंकल-आंटी लोग चख-चख कर रहे थे। उन्होंने अध्यापकों से इस संबंध में शिकायत भी की थी। प्रिंसपल सर ने कहा था - हमारी मजबूरी है। कोर्ट और सरकारी आदेशों से अब 'इन्हें' एक निश्चिन्त प्रतिशत में प्रवेश देना जरूरी हो गया है। फीस भी उनकी माफ है।

पापा लोगों ने अपने बच्चों से उन लोगों से दूर रहने को कहा। उनके साथ रहकर आखिर सीखेगे क्या। जो मैनर्स है वे भी भूल जाएंगे। उसकी कक्षा में तीन-चार नए एडमीशन हुए थे। वे बच्चे पीछे की बेंचों पर बैठते। पीयूष ने उनकी बगल में खड़े होकर देखा था। उनमें सब उससे कद में लंबे थे, कोई भी छोटा नहीं। प्रवीण का कद तो ठीक उसके बराबर, उसी की तरह दुबला-पतला था। उसे आश्चर्य हुआ-उन्हें छोटे लोग क्यों कहते हैं? वे तो उसी की तरह है। वैसे ही हँसते हैं, सजा मिलने पर रोते भी उन्हीं की तरह है। यूनिफार्म जरूर उनकी पुरानी, मटमैली और सस्ती सी थी, बस्ते भी। अंग्रेजी को छोड़ गणित सहित सभी विषयों में कमजोर नहीं थे। कक्षा में छात्र, उनका अंग्रेजी बोलना सुन कर हँसते। अध्यापकों के चेहरे पर भी मुस्कुराहट झलक जाती। पीयूष को बुरा लगता। इंगलिश नहीं लेकिन गणित में कितने तेज हैं। कोई भी सवाल गलत नहीं होता। शिवा की तो हैंडराइटिंग कितनी सुन्दर है। मोती जैसे अक्षर। खेलकूद में तो चैम्पियन है।

इंगलिश बोलते में तो पापा भी अटक जाते हैं। एक बार

वह पापा के साथ उनके आफिस गया था। स्कूल से लेने गए पापा को दफ्तर में कुछ काम याद आ गया था। पापा के केबिन में एक अंकल, शायद पापा के बॉस, आए थे। पापा उठ कर खड़े हो गए थे। बॉस अंकल कितनी तेज आवाज में अंग्रेजी में जल्दी जल्दी बोल रहे थे, जैसे डांट रहें हों। पापा 'यस सर, यस सर' कर रहे थे। उसे बहुत गुस्सा आया। पापा उन्हें अंग्रेजी में डांट क्यों नहीं देते। घर में तो मम्मी से, राजू, अखबारवाले, सब्जीवाले को, गुस्से में जब तब, अंग्रेजी में डाँटते ही रहते हैं।

वह स्वयं या उसके दोस्त भी इंगलिश ठीक से कहाँ बोल पाते हैं। वह तो घर में होम वर्क कराते समय मम्मी-पापा उत्तर रटा देते हैं। उसकी दोस्ती प्रवीण से बढ़ती गई। प्रवीण के साथ कई मित्रों ने भी साइकिल ले ली थी। वे साइकिल से स्कूल आते, खेलने, खाने की छुट्टी में एक साथ अपने अपने लंच बाक्स खोलते। प्रवीण, शिवा के डब्बों में ज्यादातर रोटी-आलू की सब्जी होती। एक दिन पीयूष प्रवीण को अपने घर लाया था। अपने कमरे में देर तक उसके साथ कॉमिक, वीडियो गेम खेलता रहा। प्रवीण को उसकी चीजें खिलौने छूने में डर सा लग रहा था। कहीं गंदी न हो जाएँ, टूट न जाएँ।

दो तीन दिन में प्रवीण स्कूल नहीं आ रहा था। उस दिन पियूष, शिवा उसके घर गए। शिवा पुराने स्कूल में प्रवीण को साथ था। उसे घर मालूम था। प्रवीण को दो दिनों में बुखार आ रहा था। रास्ते में धीमे धीमे पानी बरसने लगा। पीयुष, शिवा दोनों भीग गए थे। प्रवीण की माँ ने बड़े प्यार से दोनों को बैठाया। तौलिये से उनके सिर पोंछे। गाजर का हलवा खिलाया। एक कमरे का घर बहुत साफ सुफरा था। सभी सामान करीने से लगा हुआ। एक कोने में जमीन में ही एक चौकी पर उसकी किताबें सलीके से लगी हुई थीं। घर में प्रवीण के दो छोटे भाई भी थे। पीयूष ने देखा कि प्रवीण के छोटे भाइयों की कमीजें, निकर एक ही कपड़े, रंग, डिजायन के थे। उसको बहुत अच्छा लगा। प्रवीण ने बताया उसके पिता एक साथ थान ले आते हैं। ज्यादातर उसके जन्मदिन पर। यूनिफार्म को छोड़ सबके कपड़े उसी से बन जाते हैं। पीयूष को लगा यदि किसी को मालूम न हो, तब भी वह उनके एक तरह के कपड़ों से, पहचान लेगा कि वे भाई हैं। उसने सोचा यदि उसका भाई होता तो पापा से कहता कि उसके कपड़े भी एक तरह के सिलवाएं। उसे पता चला कि प्रवीण का जन्म दिन उसके जन्मदिन से एक दिन पहले पड़ता है।

उसका जन्मदिन तो आने वाला था। वह हर बार की तरह मम्मी-पापा के साथ बाजार गया था। उसने पिता से कहकर दो केक आर्डर दिलवाए। उसने नीली नेकर, लाल चेक की टी शर्ट पसंद की। उसने दुकानदार से कहा, 'इसी तरह, रंग की दो ड्रेसें चाहिए, साथ ही एक स्कूल यूनिफार्म भी।'

उन्हें आश्चर्य हुआ, 'दूसरा सेट किसी और रंग का लो। एक ही तरह की क्यों'? स्कूल यूनिफार्म तो तुम्हारे पास कई हैं।' लेकिन उसने जिद पकड़ ली थी। अपने जन्मदिन के एक दिन पहले वह तैयार हुआ। उस दिन रविवार के कारण स्कूल में अवकाश था। कुछ मित्रों को उसने फोन कर दिया था। स्कूल बैग में उसने किताबें निकालकर जाने क्या क्या भर लिया था। सभी दोस्त अपनी अपनी साइकिलों से चले। प्रवीण के घर के बाहर सब रुके। खटखटाने पर दरवाजा प्रवीण ने ही खोला था। ''हैप्पी बर्थ डे टू यू'' सबने दरवाजे से ही चहकना शुरू कर दिया था। प्रवीण की माँ, भाई सब घर में थे। प्रवीण की माँ ने प्रवीण के माथे पर तिलक कर उसका जन्म दिन मनाया था। उन्होंने घर में खीर और पूड़ियां बनाई थीं। सभी बच्चों को यह बहुत पसंद आया। पीयूष ने अपने बैग से कुछ पैकेट निकाल कर प्रवीण को दिए थे। प्रवीण और उसकी माँ ने लेने से मना कर दिया। पीयूष के आँखों में आँसू आ गए। आखिर उन्होंने उपहार स्वीकार कर लिए। उसने अगले दिन अपने जन्म दिन पर प्रवीण को आमंत्रित किया।

जन्मदिन के दिन पीयूष ने अपने पिता से वचन लिया था कि वे उसे उसके दोस्तों के साथ आज कार से घुमाने, पिकनिक पर ले चलेंगे। अगले दिन दोस्तों के साथ प्रवीण भी आया था। ठीक उसकी तरह नीली नेकर और लाल चेक की शर्ट में। पीयूष की माँ का दिल भर आया। अब उसे पता चला की पीयूष ने दो सेट क्यों लिए थे। उसने दोनों को गले लगा लिया। पीयुष के पिता को पुकारते हुए कहा - अरे देखो आकर। दोनों जुड़वा लग रहे हैं न?

कार की पिछली सीट पर बच्चे भरे थे। माँ अगली सीट पर पिता के बगल में बैठे घूम कर पीछे देखती। उनका चेहरा खिल जाता लेकिन बीच बीच में जाने क्यों बार बार अपनी आँखे पोंछ रही थीं। लेकिन पीयूष इस सबसे बेखबर दोस्तों में मस्त था।

व्यक्तित्व

''श्रम ही है श्रीराम हमारा''

– बाबा आमटे

अगले माह मार्च में कुछ रोग निवारण दिवस है ये जानकर बाबा आमटे की याद की याद आ गई। उनका बचपन बहुत ही ठाट-बाट से बीता। वे सोने के पालने में सोते थे और चाँदी की चम्मच से उन्हें खाना खिलाया जाता था। बचपन में वे किसी राज्य के राजकुमार की तरह रहे । जिन युवाओं ने बाबा को कुटिया में सदा लेटे हुए ही देखा- शायद ही कभी अंदाज लगा पाए होंगे कि यह शख्स जब खड़ा रहा करता था तब क्या कहर ढाता था। अपनी युवावस्था में धनी जमींदार का यह बेटा तेज कार चलाने और हॉलीवुड की फिल्म देखने की शौकीन था। अंग्रेजी फिल्मों पर लिखी उनकी समीक्षाएँ इतनी दमदार हुआ करती थी कि एक बार अमेरिकी अभिनेत्री नोर्मा शियरर ने भी उन्हें पत्र लिखकर दाद दी। उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय में कानून की पढ़ाई की और कई दिनों तक वकालत भी की। महात्मा गाँधी और विनोबा भावे से प्रभावित बाबा आमटे ने सारे भारत का दौरा कर देश के गाँवों में अभावों जीने वाले लोगों की असली समस्याओं को समझाने की कोशिश की। देश की आजादी की लड़ाई में बाबा आमटे अमर शहीद राजगुरु के साथी रहे थे। फिर राजगुरु का साथ छोड़कर गाँधी से मिले और अहिंसा का रास्ता अपनाया। विनोबा भावे से प्रभावित बाबा आमटे ने सारे भारत का दर्शन किया और इस दर्शन के दौरान उन्हें गरीबी, अन्याय आदि के भी दर्शन हुए और इन समस्याओं को दूर करने की अपराजेय ललकरूपी जलधि इनके हृदय में हिचकोले लेने लगा।

एक दिन बाबा ने एक कोढ़ी को धुआँधार बारिश में भींगते हुए देखा उसकी सहायता के लिए कोई आगे नहीं आ रहा था। उन्होनें सोचा कि अगर इसकी जगह मैं होता तो क्या होता? उन्होंने तत्क्षण बाबा उस रोगी को उठाया और अपने घर की ओर चल दिए। इसके बाद बाबा आमटे ने कुष्ठ रोग को जानने और समझने में ही अपना पूरा ध्यान लगा दिया। वड़ोरा के पास घने जंगल में अपनी पत्नी साधना ताई, दो पुत्रों एक गाय एवं सात रोगियों के साथ आनंदवन की स्थापना की। वही आनंदवन आज बाबा आमटे और उनके सहयोगियों के कठिन श्रम से आज हताश और निराश कुष्ठ रोगियों की आशा, जीवन और सम्मानजनक जीवन जीने का केन्द्र बन चुका है। मिट्टी की सीधी महक से आत्मीय रिश्ता रखने वाले बाबा आमटे ने चंद्रपुर जिले, महाराष्ट्र के वड़ोरा के निकट आनन्दवन नामक अपने इस आश्रम को आधी सदी से अधिक समय तक विकास के विलक्षण प्रयोगों की कर्मभूमि बनाए रखा। जीवनपर्यन्त कुष्ठरोगियों, आदिवासियों और मजदूर-किसानों के साथ काम करते हुए उन्होंने वर्तमान विकास के जनविरोधी चरित्र को समझा और वैकल्पिक विकास की क्रान्तिकारी जमीन तैयार की।

आनन्दवन की महत्ता चारों तरफ फैलने लगी, नए-नए आने लगे और ''आनन्दवन'' का महामंत्र ''श्रम ही है श्री राम हमारा सर्वत्र गूँजने लगा। आज ''आनन्दवन'' में स्वस्थ, आनन्दमयी और कर्मयोगियों की एक बस्ती बस गई है। भीख माँगनेवाले हाथ श्रम करके पसीने की कमाई उपजाने लगे हैं। किसी समय 14 रूपये में शुरु हुआ ''आनन्दवन'' का बजट आज करोड़ों में है। आज 180 हेक्टेयर जमीन पर फैला ''आनन्दवन'' अपनी आवश्यकता की हर वस्तु स्वयं पैदा कर रहा है । बाबा आमटे ने ''आनन्दवन'' के अलावा और भी कई कुष्ठरोगी सेवा संस्थानों जैसे, सोमनाथ,अशोकवन आदि की स्थापना की है जहाँ हजारों रोगियों की सेवा की जाती है और उन्हें रोगी से सच्चा कर्मयोगी बनाया जाता है।

सन् 1985 में बाबा आमटे ने कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत जोड़ो आन्दोलन भी चलाया था। इस आन्दोलन को चलाने के पीछे उनका मकसद देश में एकता की भावना को बढ़ावा देना और पर्यावरण के प्रति लोगों का जागरूक करना था।

सम्मान

कमला गोइन्का फाउण्डेशन

'मधुकुंज', 118, 9वां मेन, 7वाँ क्रॉस, आरएमवी एक्सटेंशन, सदाशिवनगर, बेंगलूरु - 560080
फोन : 080-23611190, 32005502, 9900020261 ई-मेल : kgf@gogoindia.com
Please visit us at : www.kgfmumbai.com

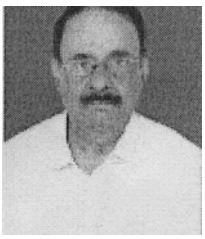
डॉ॰ टी॰ जी॰ प्रभाशंकर प्रेमी

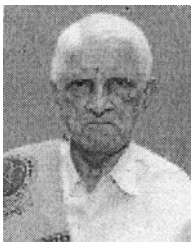
डॉ॰ पि. के. बालसुब्रह्मण्यन

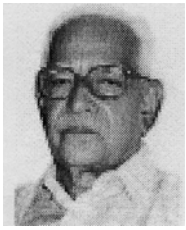
डॉ॰ सी. जी. राजगोपाल

डॉ॰ के. वनजा

दक्षिण भारत के विद्वानों के लिए गोइन्का पुरस्कारों की घोषणा

कमला गोइन्का फाउण्डेशन के प्रबन्ध न्यासी श्री श्यामसुन्दर गोइन्का ने एक प्रेस विज्ञप्ति द्वारा बताया कि दक्षिण भारत के साहित्यकारों को निम्न पुरस्कारों से इस वर्ष नवाजा जायेगा।

इक्कीस हजार रूपये के राशि का ''**गोपीराम गोइन्का हिन्दी-कन्नड़ अनुवाद पुरस्कार**'' इस वर्ष जितेन्द्रनाथ सान्याल जी की मूल कृति ''अमर शहीद सरदार भगतसिंह'' को कन्नड़ में अनूदित पुस्तक ''अमर हुतात्मा सरदार भगतसिंह'' के लिए बेंगलुरू निवासी डॉ॰ टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी जी को दिया जाएगा।

इक्कीस हजार रूपये के राशि का ''**बालकृष्ण गोइन्का अनूदित साहित्य पुरस्कार**'' इस वर्ष डॉ॰ एस. बालसुब्रह्मण्यन जी की मूल तमिल कृति ''भारतीय साहित्य के निर्माता कवि कण्णदासन'' को हिन्दी में अनुवाद के लिए चेन्नई निवासी डॉ॰ पि. के. बालसुब्रह्मण्यन जी को दिया जायेगा।

इक्कीस हजार रूपये के राशि का ''**सत्यनारायण गोइन्का अनूदित साहित्य पुरस्कार**'' इस वर्ष तुलसीदास जी द्वारा रचित ''रामचरित मानस'' को मलयालम में पद्यानुवाद के लिए तिरूवनन्तपुरम निवासी डॉ॰ सी. जी. राजगोपाल जी को दिया जायेगा।

इक्कीस हजार रूपये के राशि का ''**बाबूलाल गोइन्का हिन्दी साहित्य पुरस्कार**'' इस वर्ष कोच्ची निवासी डॉ॰ के. वनजा जी को उनकी मूल हिन्दी कृति ''इको-फेमिनिज़्म'' के लिए दिया जाएगा।

प्रबन्ध न्यासी **श्री गोइन्का** ने विज्ञप्ति द्वारा यह भी सूचित किया है कि बैंगलोर में निकट भविष्य में आयोजित एक विशेष समारोह में चयनित साहित्याकारों को पुरस्कृत किया जायेगा। यह जानकारी **कमलेश यादव, कार्यकारी सचिव, कमला गोइन्का फाउण्डेशन मो॰ 9900020161** ने दी।

बांगला लोककवि लालन फकीर पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

कोलकाता की सदीनामा पत्रिका और भारत सरकार की संस्था भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता के संयुक्त तत्वाधान में 24 फरवरी, 2018 को साढ़े चार बजे से आईसीसी और कोलकाता के सेमिनार हॉल रवीन्द्रनाथ टैगोर हॉल में ''कवि लालन

के साथ चार घंटा'' आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में कवि लालन और रवीन्द्रनाथ टैगोर, कवि लालन और बाउल, कवि लालन और सूफीमत, कवि लालन एवं फेमिनिज्म जैसे विषय पर व्याख्यान एवं गहन संवाद की ऐतिहासिक शुरुआत हुई। यह विदित है कि सन् 1774 से लेकर 1890 तक फैले समय में बांगलादेश के आईकन कवि एवं उसके राष्ट्रीय लोकगायक महान संत, समाज सुधारक, विचारक और कवि लालन शाह फकीर ऐसी विभूति रहे हैं जिनसे नजरूल और रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी प्रेरणा ली है। इस कार्यक्रम का सफल संचालन सदीनामा संपादक जितेन्द्र जितांशु और धन्यवाद ज्ञापन डॉ॰ ब्रज मोहन सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए बांगला शिल्पी, आलोचक एवं गवेषक श्री शुभोप्रसाद नंदी मजुमदार ने कहा कि गुरुदेव रवीन्द्र और लालन शाह का व्यक्तित्व एवं चिंतन की धाराएँ उस नदी की धाराएँ उस नदी और सागर की तरह है जो मिलकर एक दूसरे को परिपूर्ण करती हैं। टैगोर लालन साई की ज्ञान साधना स्थली कुस्टिया से परिचित एवं रचे बसे हैं और लालन से बहुत कुछ सीखा है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के निर्माण में लालन की विलक्षण और अद्वितीय भूमिका रही है। लालन ग्रामीण बांगला के नवजागरण के कवि हैं तो रवीन्द्र शहरी नवजागरण से प्रभावित हैं। इस चर्चा को आगे बढ़ाते हुए शांन्तिनिकेतन से पढ़े बांगला के प्राध्यापक डॉ॰ नोब गोपाल राय ने बाउल, नार्थो, सिद्धों, सहजिया बौद्धों, सूफियों, कबीर की चर्चा करते हुए बहुत परिप्रेक्ष्य में कवि लालन को धर्म की प्रतिवादी परंपरा का कवि बताया जो मानव देह, नारी की साधना का प्रधान बिंदु बताते हुए कबीर की तरह एक हिन्दू मुसलमानों के मानव विरोधी पाखंडों पर चोट करते हैं। इसके बाद सुश्री तृष्णा बसाक ने लालन और नारीवाद पर बोलते हुए कहा कि लालन समाज को

बांधने एवं बाँटने वाले प्रतीकों, चिन्हों का मूर्त प्रतिवाद करते हैं। भारतीय समाज में मातृत्व को गरिमा प्रदान की जाती है और बंध्या की अवमानना की जाती है। बाउल मातृत्व का निषेध करते हैं। बाउल लालन मातृत्व को अस्वीकार कर साहस का परिचय देते हैं। आज प्रयुक्ति ने नारी को सुविधाएँ दी हैं वहीं नारी को बंधन में भी बांधा है। आज साइबर नारीवाद का नियंत्रण हैं। लालन मन के जगत की बात करते हैं जो वर्चुअल जगत है। सक्रिय साहित्यकर्मी, अनुवादक तथा संपादक श्यामल भट्टाचार्य ने सुव्यवस्थित ढंग से लालन एवं कबीर के विभिन्न पक्षों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। इसके अलावा सर्वश्री कृष्ण मुरारी प्रसाद, ''आर्य विचार'' पत्रिका के संपादक योगेश शास्त्री, जगमोहन सिंह खोखर आदि ने अपने महत्वपूर्ण विचार रखे। संवाद सत्र में डॉ॰ ब्रज मोहन सिंह ने शांतिनिकेतन में क्षितिमोहन सेन महाशय एवं आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के कबीर संबंधी चिन्तन और परम्परा के परिप्रेक्ष्य में लालन की मूल जमीन, प्रासंगिकता को सामने रखते हुए और भारतीय उपमहाद्वीप के महत्वपूर्ण रचनाकार के रूप में रेखांकित करते आज के मानव विरोधी दौर में लालन के मानुष प्रेम को सामने रखा जो धार्मिक कट्टरता पर चोट करते हैं। इसे सेमिनार में बांगला साहित्य की दलित लेखिका कल्याणी ठाकुर भी थीं जिनके साथ सदीनामा संपादक जितेन्द्र जितांशु ने बांगला देश की यात्रा की तथा लालन में संबंधित स्थलों का दौरा किया और वहाँ के विद्वानों से मिले। इस अंतिम सत्र की अध्यक्षता थी कम्मू खटिक, सहायक प्रोफेसर, लेडी, बेबोर्स कॉलेज। इस सत्र में बाउल गीत गाए गए। सभी मान्य अतिथियों एवं विशिष्टजनों को शॉल ओढ़ाकर एवं सदीनामा प्रकाशन की पुस्तकें प्रदान कर अभिनंदन किया गया । कोलकाता और आसपास के वि.वि के शोध छात्र छात्राओं ने भी भागीदारी की । इस प्रतियोगिता अभिनव कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रो॰ कम्मो खटिक, नाट्यकर्मी अनिता रॉय' रश्मि भारती' अनूप पाल मीनाक्षी सांगानेरिया और रिंकू राजभर आदि ने विशिष्ट भूमिका निभाई। उपस्थित श्रोताओं में कवयित्री डा॰ गीता दूबे, कथाकार बिजय गौड, पूर्ति खंडूरी तथा अन्य थे। सदीनामा की यह पहल हिन्दी जग में लालन को समझने की एक दिशा खोलती है। यह रपट मारिया राजीव लिखी।

मुसलमान

देवी प्रसाद त्रिपाठी
प्रियंकर के ब्लाग
anahadnaad.wordpress.com
से साभार

वे मुसलमान थे

कहते हैं वे विपत्ति की तरह आए
कहते हैं वे प्रदूषण की तरह फैले
वे व्याधि थे

ब्राह्मण कहते थे वे मलेच्छ थे
वे मुसलमान थे

उन्होंने अपने घोड़े सिन्धु में उतारे
और पुकारते रहे हिन्दू 'हिन्दू' हिन्दू'।।

बड़ी जाति को उन्होंने बड़ा नाम दिया
नदी का नाम दिया
वे हर गहरी और अविरल नदी को
पार करना चाहते थे
वे मुसलमान थे लेकिन वे भी
यदि कबीर की समझदारी का सहारा लिया जाए तो
हिन्दुओं की तरह पैदा होते थे
उनके पास बड़ी-बड़ी कहानियाँ थी

चलने की
टहलने की
पिटने की
और मृत्यु की

प्रतिपक्षी के खून में घुटनों तक
और अपने खून में कन्धों तक
वे डूबे होते थे

उनकी मुट्ठियाँ में घोड़ों की लगाम
और म्यानों में सभ्यता के
नक्शे होते थे
न! मृत्यु के लिए नहीं
वे मृत्यु के लिए युद्ध नहीं लड़ते थे
वे मुसलमान थे

वे फारस से आए
तूरान से आए
समरकन्द, फरगना, सीस्तान से आए
तुर्किस्तान से आए

वे बहुत दूर से आए
फिर भी वे पृथ्वी के ही कुछ हिस्सों से आए
वे आए क्योंकि वे आ सकते थे

वे मुसलमान थे
वे मुसलमान थे कि या खुदा उनकी शक्लें
आदमियों से मिलते थी हुबहूँ
हूबहूँ

वे महत्वपूर्ण अप्रवासी थे
क्योंकि उनके पास दुख की स्मृतियाँ थी
वे घोड़ों के साथ सोते थे
और चट्टानों पर वीर्य बिखेर देते थे
निर्माण के लिए बेचैन थे

वे मुसलमान थे
यदि सच को सच की तरह कहा जा सकता है
तो सच को सच की तरह सुना जाना चाहिए

कि वे प्राय: इस तरह होते थे
कि प्राय: पता ही नहीं लगता था
कि वे मुसलमान थे या नहीं थे

वे मुसलमान थे

वे न होते तो लखनऊ न होता
आधा इलाहाबाद न होता
मेहराबें न होती, गुम्बद न होता
आदाब न होता

मीर मकदूम मोमिन न होते
शबाना न होती

वे न होते तो उपमहाद्वीप को सुननेवाला
खुसरो न होता

वे न होते तो पूरे देश के गुस्से से बेचैन होनेवाला
कबीर न होता
वे न होते तो भारतीय उपमहाद्वीप के दुख को
कहनेवाला गालिब न होता

मुसलमान न होते तो अट्ठारह सौ सत्तावन न होता

वे थे तो चचा हसन थे
वे थे तो पतंगों से रंगीन होते आसमान थे,

वे मुसलमान थे

वे मुसलमान थे और हिन्दुस्तान में थे
और उनके रिश्तेदार पाकिस्तान में थे

वे सोचते थे कि काश वे एक बार पाकिस्तान जा
सकते
वे सोचते थे और सोचकर डरते थे
इमरान खान को देखकर वे खुश होते थे

वे खुश होते थे और खुश होकर डरते थे
वे जितना पी॰ए॰सी॰ के सिपाही से डरते थे
उतना ही राम से

वे मुरादाबाद से डरते थे
वे मेरठ से डरते थे
वे भागलपुर से डरते थे
वे अकड़ते थे लेकिन डरते थे

वे पवित्र रंगों से डरते थे
वे अपने मुसलमान होने से डरते थे
वे फिलिस्तानी नहीं थे लेकिन अपने घर को लेकर घर में

देश को लेकर देश में
खुद को लेकर आश्वस्त नहीं थे
वे उखड़ा - उखड़ा राग देश थे

वे मुसलमान थे

वे कपड़े बुनते थे
वे कपड़े सिलते थे
वे ताले बनाते थे
वे बक्शे बनाते थे
उनके श्रम की आवाजें
पूरे शहर में गूँजती रहती थी

वे शहर के बाहर रहते थे

वे मुसलमान थे लेकिन दमिश्क उनका शहर नहीं था

वे मुसलमान थे अरब का पेट्रोल उनका नही था
वे दजला का नहीं यमुना का पानी पीते थे

वे मुसलमान थे

वे मुसलमान थे इसलिए बच के निकलते थे
वे मुसलमान थे इसलिए कुछ कहते थे तो हिचकते थे
देश के ज्यादातर अखबार यह कहते थे
कि मुसलमान के कारण ही कर्फ्यू लगते थे
कर्फ्यू लगते थे और एक के बाद दूसरे हादसे की
खबरें आती थीं

उनकी औरतें
बिना दहाड़ मारे पछाड़े खाती थीं
बच्चे दीवारों से चिपके रहते थे

वे मुसलमान थे

वे मुसलमान थे इसलिए
जंग लगे तालों की तरह से खुलते नहीं थे

वे अगर पाँच बार नमाज पढ़ते थे
तो उसके कई गुना ज्यादा बार
सिर पटकते थे

वे मुसलमान थे

❑ कविता ❑

वे पूछना चाहते थे कि इस लाल किले का हम क्या करें?
वे पूछना चाहते थे कि इस हुमायूँ के मकबरे का हम क्या करें
हम क्या करें इस मस्जिद का जिसका नाम
कुय्यत-उल-इस्लाम है

इस्लाम की ताकत है
अदरक की तरह वे बहुत कड़वे थे
वे मुसलमान थे

वे सोचते थे कि कहीं और चले जाएँ
लेकिन नहीं जा सकते थे
वे सोचते थे यही रह जाएँ
तो नहीं रह सकते थे
वे आधा जिबह बकरे की तरह तकलीफ के झटके
महसूस करते थे
वे मुसलमान थे इसलिए

तूफान में फँसे जहाज के मुसाफिर की तरह
एक दूसरे को भींचे रहते थे

कुछ लोगों ने यहं बहस चलाई थी कि
उन्हें फेंका जाए तो
किस समुद्र में फेंका जाए
बहस यह थी

कि उन्हें धकेला जाए
तो किस पहाड़ से धकेला जाए

वे मुसलमान थे लेकिन वे चाँटियाँ नहीं थे
वे मुसलमान थे वे चूजे नहीं थे

सावधान!

सिन्धु के दक्षिण में
सैकड़ों सालों की नागरिकता के बाद
मिट्टी ढेले नहीं थे वे

वे चट्टान और ऊन की तरह सच थे
वे सिन्धु और हिन्दुकुश की तरह सच थे
सच को जिस तरह भी समझा जा सकता हो
उस तरह वे सच थे
वे सभ्यता का अनिवार्य नियम थे
वे मुसलमान थे अफवाह नहीं थे,
वे मुसलमान थे
वे मुसलमान थे
वे मुसलमान थे

रक्षा उत्पादन कर्मचारी महासंघ के महा सचिव आर॰ श्रीनिवास से सदीनामा का साक्षात्कार

राष्ट्र की प्रमुखताओं में उसकी सुरक्षा प्रमुख है। रक्षा सामग्री उत्पादन रक्षा का चौथा खम्भा है। पिछले कुछ दिनों से सरकार इनके आधुनिकीकरण और कार्यशैली में सुधार की बजाय इनके बन्द करने और रक्षा उत्पादों को प्राइवेट के हाथों सौपने की दिशा में काम कर रही है। रक्षा उत्पादन कारखानों में काम करने वाले कर्मचारियों के तीन बड़े महासंघ है। आईएनडीडब्ल्यूएफ (कांग्रेस), एआईडीएफ (वामपंथी) तथा बीपीएमएस (भाजपा)। तीनों महासंघों ने मिलकर 15 फरवरी 2018 को संसद मार्ग पर संयुक्त रूप से धरना दिया,हजारों कर्मचारी पहुँचे। हमने इन्हीं महासंघों में एक के महासचिव से संक्षिप्त बातचीत की है जो यहाँ दी जा रही है । सं॰

सदी :- आपका परिचय ?

आर॰ श्री :– मेरा नाम आर॰ श्रीनिवासन है। मैं मिनिस्ट्री ऑफ डिफेन्स से मान्यता प्राप्त इंडियन नेशनल डिफेन्स वर्कर्स फेडरेशन का महा सचिव हूँ साथ ही मिनिस्ट्री ऑफ डिफेन्स की विभागीय परिषद में सचिव हूँ और ऑर्डनेन्स फैक्ट्री बोर्ड का जेसीएम III भी हूँ।

सदी :- मौजूदा समय में भारत के रक्षा क्षेत्र में किस तरह का परिवर्तन आया है ?

आर॰ श्री :- यूपीए सरकार के समय में 26% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश था पर जब रक्षा मंत्रालय ने प्रस्ताव रखा तो उन्होंने इंकार कर दिया है। फिर एनडीए सरकार ने 2014 से 100% तक एफडीआई बढ़ाने का निर्णय लिया जिसका इंडियन नेशनल डिफेन्स वर्कर्स फेडरेशन ने विरोध किया। विरोध के कारण 51% सरकारी और 49% विदेशी निर्देशित हुआ जिसे बाद में 100% कर दिया गया। 100% सरकारी निवेश होगा, नीतिगत निर्णय वह लेगा और दर निर्धारण सब वही करेंगे। बाद में 100% एफडीआई का मतलब यह है कि सरकार का उद्देश्य 70% आयात और 30% स्वदेशी है आवश्यकता रक्षा में। स्वदेशी उत्पादन को बढ़ाने के लिए यूपीए सरकार भी कोशिश किया है, जो सुधारें हो रहा है लेकिन एफडीआई के आने के बाद इन लोगों का 60% आयत सहयोग और मूल उपकरण कौन सा कंपनी विदेश में बना रहा है वह प्रत्यक्ष यहाँ भेज सकता है 30% स्वदेशी को लेकर उसको इकट्ठा करके गर्वर्नमेंट को आपूर्ति करने का मेक-इन-इण्डिया योजना के तहत। यह आने के बाद उन्होंने तोपखानों का दबाव डालना शुरू किया सरकार ने। तोपों का तोपखाने उत्पादन कर रहे हैं और डीआरडीओ अनुसंधान कर रहा है, तो डीआरडीओ अनुसंधान करने के बाद पर यह परीक्षण पर जायेगा अनुमोदन होने के बाद उत्पादन होगा। वह प्रौद्योगिकी अंतरण के द्वारा संयुक्त उद्यम के द्वारा बाहर की चीजें इधर आएगीं जो डीआरडीओ का काम नहीं है। लगभग 52 लाख प्रयोगशाला उनके नियंत्रण में है।

सदी :- कौन-कौन से कारखाने इसके तहत हैं ?

आर॰ श्री॰ :- व्हीकल फैक्ट्री ऑफ जबलपुर, ऑर्डनेन्स इक्विपमेंट फैक्ट्री जो कपड़ा, जूता और वर्दी बनाते हैं।

सदी :- कारखाने बंद होने पर देश को कैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता हैं?

आर॰ श्री :- कारखाने बंद हो जायेंगे तो लोग बाजार से अपनी जरूरतों की चीजें खरीदेंगे' जिनकी गुणवत्ता अच्छी नहीं होगी।

सदी :- युद्ध के समय ऑर्डेनेन्स फैक्ट्री गैर-सरकारी कारखानों की तुलना में किस तरह सहायक साबित होगी ?

आर॰ श्री॰ :- पहली बात, ऑर्डनेन्स फैक्ट्री की प्रतिबद्धता है, ''जितनी मांग उतनी आपूर्ति'' पर गैर सरकारी कारखानों की ऐसी कुछ प्रतिबद्धता नहीं है। युद्ध के समय अगर मांग बढ़ेगी तो उत्पाद लागत भी बढ़ेगी, जिसमें आपूर्ति भी समय पर नहीं होगी जो देश की सुरक्षा के लिए गम्भीर समस्या बन सकती है। दूसरी बात-राइफल, छोटे हथियार, पिस्तौल, गोलाबारूद का उत्पादन अगर गैरसरकारी कारखानों के पास जाता है तो उनका उत्पादन सूत्र बाहर भी जा सकता है। जबकि ऑर्डनेन्स फैक्ट्री की सुरक्षा मजबूत है। तीसरी बात-अगर गैर सरकारी कारखानों के हाथों में जाता है तो नए लोगों की भर्ती बंद हो जाएगी। जिससे देश में बेरोजगारी बढ़ जाएगी।

सदी :- सरकार की इसमें क्या भूमिका है ?

आर॰ श्री :- सरकार बहुत जल्दी फैसला ले रहा है। वह श्रमिक संघ के साथ बैठकर बात-चीत भी नहीं कर रहा है। यहाँ लगभग 1 लाख कर्मचारी काम करते हैं। श्रमिक संघ ने सरकार को वर्तमान परिस्थिति से आगाह करते हुए इतने बड़े संख्या वाले कर्मचारियों और प्रौद्योगिकी को बचाने का रास्ता मांगा है। ऑर्डनेन्स फैक्ट्री का हर साल का मांगपत्र रहता है पर विदेशी कंपनियों का कहना है कि हमें आर्डर और गारंटी दो?

सदी :- कौन - कौन से कारखाने इसके तहत आते हैं?

आ.श्री :- व्हीकल फैक्ट्री ऑफ जबलपुर, ऑर्डनेन्स फैक्ट्री, आर्म्ड व्हीकल, इन्फेंट्री व्हीकल इनके तहत आते हैं। अशोक लेलैंड और टाटा सेना को सामान देता है। जहाँ उत्पादन अपना होता है और सब-असेंबली बाहर का होता है। जिस कारण सेना का कहना है कि वह इन कंपनियों से सामान न लेकर सीधे विदेशी कंपनियों से ही सामान लेगा। 2019 में इन कंपनियों का अनुबंध समाप्त हो जाएगा। अगर यह स्थिति रही तो लगभग 4000 लोग बेरोजगार हो जाएंगे। सरकार अतिरिक्त श्रमशक्ति को बाँट देगा। काम की अवस्था कम हो जायेगी। **सदीनामा के लिए यह साक्षात्कार पटना निवासी सुमित्रा मुखर्जी ने लिया।**

सदीनामा

फार्म-4

(देखिए नियम आठ)

1. प्रकाशन स्थल	:	H-5, Govt.Qtrs. Budge Budge (बजबज), Kolkata-137, 24 Pgs. (S), W.B. India
2. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3. मुद्रक व प्रकाशक	:	सोनिया शर्मा
4. सम्पादक का नाम	:	जितेन्द्र जितांशु
5. क्या भारतीय नागरिक हैं	:	पता
	:	H-5, Govt.Qtrs. Budge Budge (बजबज), Kolkata-137, 24 Pgs. (S), W.B. India
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो मालिक हैं तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों।	:	सोनिया शर्मा H-5, Govt.Qtrs. Budge Budge (बजबज), Kolkata-137, 24 Pgs. (S), W.B. India

मैं, सोनिया शर्मा एतद्द्वारा घोषित करती हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपरोक्त विवरण सत्य है।

प्रकाशक के हस्ताक्षर

दिनांक : 01-03-2018 सोनिया शर्मा

कट्टर विचारधाराएं और भारत में वैज्ञानिक सोच का भविष्य

रामपुनियानी
ram.puniyani@gmail.com
अंग्रेजी से हिन्दी रूपातरण अमरीश हरदेनिया

भारत की स्वतंत्रता और उसके नए संविधान के लागू होने के साथ ही, देश की प्रगति की नींव रखी गई। हमारे देश के संविधान निर्माताओं का यह सपना था कि देश सभी क्षेत्रों में प्रगति करे, उसके सभी नागरिकों को आगे बढ़ने के समान अवसर उपलब्ध हों और वैज्ञानिक सोच, इस प्रगति का आधार हो। स्वतंत्रता के तुरन्त बाद हमारे देश का नेतृत्व आधुनिक भारत के निर्माता जवाहरलाल नेंहरू के हाथों में था। देश में एक के बाद एक कई वैज्ञानिक संस्थाएँ और संस्थान अस्तित्व में आए और वैज्ञानिकों ने देश की प्रगति में महती योगदान दिया। नि:संदेह, कमियाँ थीं और गलतियाँ भी हुई, परन्तु मोटे तौर पर देश, वैज्ञानिक सोच पर आधारित आर्थिक समृद्धि की ओर बढ़ा। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 51ए वैज्ञानिक सोच के विकास को नागरिकों के मूल कर्तव्यों में शामिल करता है।

भारतीय जनता पार्टी, जो इस समय देश पर शासन कर रही है, के नेताओं की सोच इससे अलग है। विज्ञान और तकनीकी ने हमें सभी क्षेत्रों में प्रगति करने में मदद की है, चाहे वह स्वास्थ्य हों, परमाणु ऊर्जा हो, अंतरिक्ष तकनीकि हो या भवन निर्माण। परन्तु अब ऐसा लग रहा है कि सत्ताधारी दल और उसके नेता, हमें उल्टी दिशा में धकेलना चाहते हैं।

पिछले सत्तर सालों में हमारे देश में दर्जनों उच्च कोटि के वैज्ञानिक संस्थान अस्तित्व में आए हैं और उन्होंने हमारे देश के समग्र विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया है। भारतीय जनता पार्टी, देश को किस दिशा में ले जाना चाहती है, उसका अंदाजा हमें एनडीए की पहली सरकार के गठन के साथ ही हो गया था। तत्कालीन मानव संसाधन मंत्री मुरली मनोहर जोशी ने ज्योतिष और पुरोहिताई जैसे विषयों को विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल करवाया था। हाल में, डॉक्टर सत्यपाल सिंह, जो कि केन्द्रीय मानव संसाधन राज्य मंत्री है, ने फरमाया कि डार्विन का उद्वविकास का सिद्धान्त गलत है क्योंकि हमारे पूर्वजों ने किसी ग्रन्थ में यह नहीं कहा है कि उन्होंने बंदरों को मनुष्य बनते देखा। बात यही समाप्त नहीं हुई। श्री सत्यपाल सिंह की इस ज्ञानवाणी का आरएसएस से भाजपा में आए राम माधव ने भी समर्थन किया।

सत्यपाल सिंह ने ही कुछ समय पहले कहा था कि हवाईजहाज का आविष्कार राईट बंधुओं ने नहीं किया था बल्कि शिवकर बापोजी तालपड़े नामक एक भारतीय ने पहली बार यह दिखाया था कि मनुष्य हवा में उड़ सकता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि स्कूलों और कॉलेजों के विद्यार्थियों को तालपाड़े जैसे लोगों का योगदान के बारे में बताया जाना चाहिए। डार्विन का उद्वविकास का सिद्धान्त, एक लंबे शोध का परिणाम था और चार्ल्स डार्विन ने इस सिद्धान्त को दशकों तक श्रमसाध्य अनुसंधान करने के बाद प्रतिपादित किया था। चूंकि विज्ञान, आस्था पर आधारित नहीं होता इसलिए किसी भी सिद्धान्त में कमियों को वैज्ञानिकों की आने वाली पीढ़ियाँ दूर करती जाती है और इस तरह विज्ञान का विकास होता है। इसके विपरीत, धार्मिक कट्टरपंथियों की यह मान्यता होती है कि सारा ज्ञान पहले से ही धर्मग्रन्थों में मौजूद है और उसे चुनौती नही दी जा सकती क्योंकि वह दैवीय वाणी है। सिंह-जोशी-राम माधव अकेले ऐसे व्यक्ति नहीं है जो इस तरह की प्रतिगामी सोच रखते हों। ईसाई कट्टरपंथियों ने भी सृष्टि के निर्माण का अपना सिद्धान्त प्रतिपादित कर डार्विन

को गलत ठहराने की कोशिश की थी। जाकिर नायक जैसे मुस्लिम कट्टरपंथियों ने भी डार्विन के सिद्धान्त को बेतुके तर्कों के आधार पर खारिज किया था।

सिंह के बयान से देश के वैज्ञानिक समुदाय को गहरा धक्का लगा। कई वैज्ञानिकों ने अपनी पीड़ा और क्षोभ व्यक्त करने के लिए मंत्रीजी को एक पत्र लिखा। इसमें कहा गया कि उनका बयान भ्रामक है। ''इस बात के पर्याप्त और निर्विवाद प्रमाण हैं कि मनुष्यों और वानरों के पूर्वज एक ही थे।'' पत्र में यह भी कहा गया कि मंत्री का यह दावा कि वेदों में मनुष्यों के सारे प्रश्नों के उत्तर हैं, अतिशयोक्तिपूर्ण है और ''भारतीय वैज्ञानिक परंपरा के उन सैकड़ों अनुसंधानकर्ताओं का अपमान है जिन्होंने अत्यन्त परिश्रम से विज्ञान के क्षेत्र में शोध और खोजें की है।''

''जब कोई मंत्री, जो देश में मानव संसाधन के विकास के लिए उत्तरदायी हो, इस प्रकार के दावे करता है तो उससे वैज्ञानिक समुदाय के वैज्ञानिक सोच और तार्किकता को बढ़ावा देने के प्रयासों को धक्का लगता है। इससे आधुनिक वैज्ञानिक शोध और शिक्षा प्रगति में बाधा आती है। इसके अतिरिक्त, इस तरह के वक्तव्यों से वैश्विक स्तर पर देश की छवि धूमिल होती है और देश में किए जा रहे वैज्ञानिक शोध पर अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक समुदाय का विश्वास घटता है, पत्र में कहा गया।''

यह भी दावा किया जा रहा है कि कौरवों का जन्म हमारे पवित्र ग्रन्थों में बताई गई तकनीकी से हुआ था और इसी के आधार पर बालकृष्ण गणपत मातापुरकर नामक व्यक्ति ने मानव अंगों के पुनर्जन्म की तकनीकी का पेटेंट भी करवाया है। वे गांधारी द्वारा सौ पुत्रों को जन्म देने और कर्ण के कुंती के कान से पैदा होने की कथाओं से अत्यन्त प्रभावित हैं। इस सिलसिले में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के मुखिया वाय सुदर्शन के विचार भी दिलचस्प हैं। उनके अनुसार महाभारत के अध्ययन से यह साफ हो जाता है कि उसमें वर्णित हथियार, परमाणु संलयन या परमाणु विखंडन के सिद्धान्त पर आधारित थे। उनका यह भी दावा है कि लौह युग के भारत में सेल तकनीकी मौजूद थी।

कहने की जरूरत नहीं कि हमारे नीति-निर्माताओं की यह सोच, देश में वैज्ञानिक शोध और वैज्ञानिक समझ दोनों को गंभीर क्षति पहुँचाने की क्षमता रखती है। इन दिनों ऐसे विषयों पर शोध को प्रोत्साहन दिया जा रहा है जो केवल कल्पना की उपज है। हाल में भारत सरकार ने 'पंचगव्य' (गौमूत्र, गोबर, घी, दही और दूध के मिश्रण) पर शोध के लिए भारी धनराशि आवंटित की है। यह साबित करने की हर संभव कोशिश की जा रही है कि राम सेतु (एड्म्स ब्रिज), भारत और श्रीलंका को जोड़ने वाला एक पुल था, जिसके निर्माण भगवान राम ने वानर सेना की मदद से किया था। यह साबित करने के प्रयास भी हो रहे हैं कि सरस्वती नाम की नदी के भारत की धरती पर बहा करती थी और यह भी कि रामायण और महाभारत ऐतिहासिक घटनाक्रम पर आधारित है।

इन सब प्रयासों के दो उद्देश्य है - पहला, यह साबित करना कि हमारे शास्त्रों में पहले से ही सारा ज्ञान उपलब्ध है और वैज्ञानिकों अब उसे प्रकाश में लाने और सही साबित करने के लिए ही शोध करना चाहिए। दूसरा, दुनिया की सारी वैज्ञानिक सफलताएँ और खोजें, भारत में की गई और वह भी इस देश में मुसलमानों और ईसाइयों के आगमन से पहले। यह दरअसल भारत को केवल हिन्दुओं और हिन्दु धर्म का देश बताने के प्रयासों का हिस्सा है। पिछले कई दशकों में भारत में वैज्ञानिक शोध की मजबूत नींव तैयार हुई है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कई वैज्ञानिक संस्थान अस्तित्व में आए हैं। क्या हमारे देश का वैज्ञानिक समुदाय इन सारी उपलब्धियों पर पानी फेरने के प्रयासों का विरोध कर सकेगा? क्या हमारी आने वाली पीढ़ी तार्किक ढंग से सोच सकेगी और वैज्ञानिक शोध को आगे ले पाएंगी?

पश्चिम बंगाल में हिन्दी भाषा - साहित्य : दशा-दिशा

डॉ॰ कमला प्रसाद द्विवेदा

(लेखक लम्बे समय से कोलकाता में हैं। यह लेख जनवरी में अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन आयोजित भारतीय संस्कृति संसद, कोलकाता में पढ़ा जाता था, पर समयाभाव के कारण नहीं पढ़ा जा सका। - सम्पादक

अग्रसोची सोनार बांग्ला अनेक क्षेत्रों में अग्रणी रहा है। वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु, वंदे मातरम् के गायक बंकिम चन्द्र, सतीप्रथा का अन्त कराने वाले राजा राममोहन राय, मानव को महामानव बनाने वाले महर्षि अरविन्द, नोबेल पुरस्कार से मंडित कवीन्द्र रवीन्द्र, समुद्र पार कर भारत का भाल उन्नत करने वाले स्वामी विवेकानन्द और 'आजाद हिन्द' के सेनानायक नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं। इसी तरह बंगाल को यह भी गौरव प्राप्त है कि वह हिन्दी, लिपि, भाषा साहित्य और प्रकाशन के विकास में अग्रणी रहा है।

बंगाल में हिन्दी का प्रवेश और आमजन में प्रसार :- किसी भाषा के प्रतिष्ठित हो जाने के पश्चात् ही उसके शिक्षण और साहित्य सृजन का अवसर उपस्थित होता है। इस बंगभाषी प्रदेश में हिन्दी का प्रवेश और विस्तार कब और कैसे हुआ ? इसे समझाने के लिए इसके कुछ पहलुओं पर चर्चा करना आवश्यक है। हिन्दी भाषी, प्रदेश अंग (बिहार) इसका सदा का पड़ोसी है। नवनन्दों, मौर्यो और शुंगों का बंगाल और बिहार में शासन रहा। बिहार की मैथिली भाषा बंगला के इतने निकट थी कि चौदहवीं शती के मैथिली के कवि विद्यापति को मैथिली, बंगला और हिन्दी तीनों ने अपना आदि कवि माना। शेरशाह सूरी द्वारा ग्रांड टैंक रोड बनवा देने से मन्दगति के पशु-वाहन भी उपलब्ध हो गए। बंगाल में मुगलों और उनके द्वारा नियुक्त 35 नवाबों का शासन रहा जिससे अरबी-फारसी मिश्रित उर्दू भाषा हिन्दी भाषा के शब्दों के साथ में मिलकर कालान्तर में हिन्दुस्तानी का रूप लिया। 1585 ई॰ में अकबर ने सुलेमान किरानी की सहायता के लिए मानसिंह को राजपूत सेना के साथ भेजा था तो उनके साथ जोधपुर के कुछ वैश्य भी आए थे। 1653 ई॰ में हीरानन्द सा जोधपुर से पटना आकर बसे। उनके सात पुत्रों में ज्येष्ठपुत्र माणिकचन्द्र ने ढाका और मुर्शिदाबाद में हुंडी का कारोबार चलाया। इनके वंशधर जगत सेठ कहलाये और बंगाल की राजनीति में अपना वर्चस्व स्थापित किया। इनके हुंडीके कारोबार से बहुत से हिन्दी भाषी जुड़े थे। क्लाइव की सेना में 2100 हिन्दुस्तानी थे। 1757 में प्लासी के युद्ध में सिराजुद्दौला की पराजय के बाद 24 परगना कम्पनी के हाथ आ गया। मीरजाफर की हार के बाद पूरे बंगाल में अंग्रेजों का अधिकार हो गया। कलकत्ता शासन का राजधानी बना। नये - नये उद्योग और व्यवसाय रूप में। राजस्थान और हरियाणा का वैश्य समाज व्यापार के लिए उमड़ पड़ा और धीरे धीरे जूट और चाय उद्योग पर आधिपत्य स्थापित कर लिया। 1860 ई0 में दिल्ली से कलकत्ता तक रेलपथ बन जाने से बिहार और उत्तर भारत से आजीविका के लिए अनेक लोग आए जो अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार विभिन्न कार्यों में लग गए। मध्यम वर्ग और श्रमिकों की भाषा होने से हिन्दी आमजन की भाषा हो

गई।

हिन्दी भाषा और साहित्य का शिक्षण :- भाषा और साहित्य के पठन-पाठन के लिए पुस्तकों का होना आवश्यक है। मुद्रण, कला के आविष्कार के पूर्व निजी मदरसों और पाठशालाओं में गठित और भाषा की सामान्य शिक्षा दी जाती थी। सम्पन्न घरानों में गृह-शिक्षक होते थे। ईस्ट इण्डिया के क्लर्क चार्ल्स विलिकिन्स ने श्रीराम पुर नैप्टिस्ट प्रेस में बाइबिल का अनुवाद छापने के लिए बंगाली कारीगर पंचानन कर्मकार से 2 मई, 1778 ई॰ को बंगला और देवनागरी के अक्षर तैयार कराये। पंचानन कर्मकार ने अपने भतीजे मनोहर के साथ श्रीरामपुर प्रेस में रहकर धीरे-धीरे सभी भाषाओं के अक्षर बना डाले जिससे 35 भाषाओं में नये और पुराने टेस्टामेन्ट के अनुवाद छपे। यह कार्य मिशनरी के संस्थापक जोशुआ मार्शमैन और विलियम कैरे ने किया। विलियम कैरे फोर्ट विलियम कालेज में बंगला और संस्कृत के अध्यापक हो गए थे। उन्हें बंगला गद्य का जनक भी माना जाता है। धीरे इन अक्षरों का प्रयोग अन्य प्रेसों में भी होने लगा।

ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासनकाल में सिविल सेवकों को बंगाली, हिन्दी और उर्दू जैसे क्षेत्रीय भाषाओं को सीखने की आवश्यकता हुई। वेलेजली के आदेश से इनकी शिक्षा के लिए 'ओरियन्टल सेमिनरी' की स्थापना हुई और मुंशी के रूप में कम्पनी के सहायक सर्जन बहुभाषाद्ध जान वाथविक गिलक्राईस्ट ने 25 दिसम्बर, 1798 से राइटर्स बिल्डिंग के एक कमरे में पढ़ाना आरम्भ किया। वेलेजली के प्रयास से 4 मई, 1870ई॰ को जब फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना हुई तो उसमें गिलक्राइस्ट प्रधानाध्यापक (प्रोफेसर) नियुक्त हुए। इनके अधीन छः मुंशी नियुक्त हुए। बाद में अन्य पदों का भी सृजन हुआ। गिलक्राइस्ट ने आगरे के गुजराती ब्राह्मण लल्लूलाल कवि को प्रथम और शाहाबाद (बिहार) के सदल मिश्र को द्वितीय भाषा मुंशी के पद पर नियुक्त किया। इनके द्वारा लिखित और अनूवादित पुस्तकें प्रेमसागर' नासिकेतोपाख्यान, सिंहासन बत्तीसी, बैताल पचीसी, माधोनल, शकुन्तला नाटक और अध्यात्म रामायण को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया। गिल क्राइस्ट ने स्वयं अंग्रेजी कोश, हिन्दुस्तानी ग्रामर और हिन्दी की पहली पुस्तक की रचना की थी। इनके द्वारा लिखित 'हिन्दी ऐक्सरसाइजेज फार द फर्स्ट एण्ड सेकेण्ड एक्जामिनेशन इन हिन्दुस्तानी एट द कालेज आफ फोर्ट विलियम' सन् 1801 में प्रकाशित हिन्दी की पहली मुद्रित पुस्तक मानी जाती है। कालान्तर में जेम्स मोयट, जान विलियम टेलर और विलियम प्राइस, प्रधानाध्यापक हुए। गंगा प्रसाद शुक्ल (ख्याली राम), ब्रह्म सच्चिदानन्द और मधुसूदन तर्कालंकार क्रमश, हिन्दी के भाषा मुंशी हुए।

17 अगस्त, 1818 में 'कलकत्ता बुक सोसाइटी'की स्थापना हुई जिसने प्राथमिक विद्यालयों के लिए पाठ्य-पुस्तकें तैयार कराईं और चार वर्षों में 84 स्कूल स्थापित कर दिए। सन् 1848 में सरकार ने शिक्षा के माध्यम के लिए मातृभाषा के पक्ष में निर्णय लिया। व्याख्यान वाचस्पति पं॰ दीनदयालु शर्मा की प्रेरणा से विशुद्धानन्द संन्यासी के नाम से 19 सितम्बर, 1901 को 'विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय' की स्थापना हुई। पूर्वी भारत में यह प्रथम हिन्दी विद्यालय था। बाद में कई माध्यमिक विद्यालय खुले। इनमें श्री माहेश्वरी विद्यालय (1907) श्री डीडू माहेश्वरी पंचालय विद्यालय (1911), श्री सनातन धर्म विद्यालय (1915),सत्यनारायण माधव मिश्र विद्यालय

(1920) और सलकिया विक्रम विद्यालय (1935) के नाम उल्लेखनीय है।

24 जनवरी, 1857 को अलक्जेन्डर डफ द्वारा 'कलकत्ता विश्वविद्यालय की स्थापना कर दी गई थी।' सन् 1919 में आशुतोष मुखोपाध्याय के प्रयास से इसमें स्नातकोत्तर हिन्दी पाठ्यक्रम का समावेश हुआ। महामहोपाध्याय शकल नारायण शर्मा हिन्दी के प्रथम अध्यापक बने। उल्लेखनीय है कि बंगलाभाषी नलिनी मोहन सान्याल ने हिन्दी में सर्वप्रथम स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की और उन्होंने ही सर्वप्रथम 81 वर्ष की आयु में पी.एच.डी. की भी उपाधि प्राप्त की। प्राध्यापक पद पर प्रतिष्ठित होने वाले दूसरे विद्वान ललिता प्रसाद सुकुल थे। आचार्य कल्याणमल लोढ़ा के प्रयास से स्वतंत्र हिन्दी विभाग का गठन हुआ। रीडर पद पर डॉ॰ सत्येन्द्र नियुक्त हुए जो कुछ दिन बाद चले गए और सुकुल जी का निधन हो गया। आचार्य कल्याणमल लोढ़ा क्रमशः रीडर और विभागाध्यक्ष बने। इनके प्रयास से विश्वविद्यालय में आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, प्रबोधनारायण सिंह, दयानन्द श्रीवास्तव, रामप्रीत उपाध्याय और शंभुनाथ जी नियुक्त हुए और इनमें से कुछ विभागाध्यक्ष तक बने।

भागीरथ कानोड़िया हलवासिया ट्रस्ट का काम देखते थे। सीतारामजी सेकसरिया और कानोड़ियाजी का प्रेरणा से सन् 1940 में पुरुषोत्तमदास हलवासिया ने शान्ति निकेतन विश्वभारती विश्वविद्यालय में 'हिन्दी भवन' की स्थापना की। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी एक दशक तक इसके निदेशक रहे।

सम्प्रति पश्चिम बंगाल में छात्र-छात्राओं के लिए अनेक महाविद्यालय स्थापित हो चुके हैं। परवर्ती विश्वविद्यालयों में जादवपुर विश्वविद्यालय, कल्याणी विश्वविद्यालय, प्रेसीडेन्सी विश्वविद्यालय, वर्धमान विश्वविद्यालय, पश्चिमबंगाल राज्य विश्वविद्यालय-बारासात, विद्यासागर विश्वविद्यालय - मेदिनीपुर, नार्थ बंगाल विश्व विद्यालय, दार्जिलिंग, काजीनजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल के नाम उल्लेखनीय हैं। ये सभी हिन्दी के शिक्षण और शोध कार्य में संलग्न है।

हिन्दी में साहित्य सृजन :-

हिन्दी साहित्य में जो सृजित हुआ था, उसका प्रारम्भिक मुद्रण और प्रकाशक पश्चिम बंगाल रहा है। साहित्यिक दृष्टि से प्रथम ग्रन्थ सन् 1802 ई॰ में मुद्रित अब्दुल्ला मिस्कीन का लिखा हुआ 11 पृष्ठों का मर्सिया अर्थात् शोकगीत था, जिसका शीर्षक था – ''मर्सिउ आर एलेजी आन द डेथ आफ मुस्लिम एंड हिज टू सन्स'' और जिसे फोर्टविलियम कालेज ने छापा था। इसके बाद तीस वर्षों (1836) तक हिन्दी की सभी पुस्तक केवल बंगाल से प्रकाशित हुई। इस अवधि में छपी कुल 72 पुस्तके उपलब्ध हुई। इनमें 25 प्रथम संस्करण की थीं, शेष पुनर्मुद्रित थीं। बंगाल में हिन्दी साहित्य के सृजन के तीन कारक थे - पत्र-पत्रिकाएँ, अहिन्दी-भाषी और हिन्दीभाषी।

पत्र-पत्रिकाओं का योगदान :-

बंगाल की पत्र-पत्रिकाएँ हिन्दी साहित्य के पल्लवन की प्रथम माध्यम थीं। इनके सम्पादन में हिन्दी के प्रायः सभी बड़े-बड़े साहित्यकार जुड़े थे। कुछ पहले से ही प्रवासी थे, कुछ स्वयं आकर्षित होकर आए अथवा बुलाये गए। समग्र जानकारी के लिए संपादकाचार्य के अम्बिका प्रसाद वाजपेयी का 'समाचार पत्रों' का इतिहास तथा डॉ॰ कृष्णबिहारी मिश्र के ग्रन्थ-हिन्दी पत्रकारिता' तथा हिन्दी साहित्य : बंगीय भूमिका' अवलोकनीय हैं।

यहाँ प्रमुख पत्रों के सम्पादन से जुड़े साहित्यकारों के नामों को बता देना अभीष्ट है।

उदन्त मार्तण्ड, साप्ताहिक (30 मई, 1826) हिन्दी के प्रथम पत्र के सम्पादक युगल किशोर शुक्ल। इनके पत्र की 300 प्रतियाँ पढ़ी जाती थीं और अर्थाभाव में बन्द हो जाने पर इन्होंने कालान्तर में 'सामदण्ड मार्तदण्ड' निकाला।

भारत मित्र, दैनिक - छोटूलाल मिश्र, दुर्गा प्रसाद मिश्र, हरमुकुन्द शास्त्री, जगन्नाथ चतुर्वेदी, अमृतलाल चक्रवर्ती, क्षेत्रपाल शर्मा, रामदास वर्मा, राधाकृष्ण चतुर्वेदी, प्यारेलाल, रुद्रदत्त शर्मा और बालमुकुन्द गुप्त।

नृसिंह, मासिक, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी

मतवाला, साप्ताहिक - निराला, उग्र, शिवपूजन सहाय

श्रीकृष्ण संदेश, साप्ताहिक - लक्ष्मण नारायण गर्दे

विशाल भारत, मासिक - बनारसी दास चतुर्वेदी, अज्ञेय, श्रीराम शर्मा, मोहन-सिंह सेंगर।

विश्वभारती मासिक :- हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामसिंह तोमर उल्लेखनीय है कि 'मतवाला' और विशाल भारत' में हिन्दी के प्राय भी श्रेष्ठ साहित्यकारों की रचनाएँ छपी थीं।

छठें दशक के बाद साहित्यकारों के निजी प्रयास से अनियतकालीन और अल्पजीवी पचासों पत्रिकाएँ निकली। **सम्प्रति दैनिक समाचार पत्रों में बाबू मूलचन्द अग्रवाल का विश्वमित्र (1932) सबसे दीर्घजीवी है।** जनसत्ता, सन्मार्ग, प्रभात खबर, छपते-छपते, राजस्थान-पत्रिका, राष्ट्रीय महानगर चर्चित हैं किन्तु बाजारवाद के चंगुल में फँसे साहित्य से कटे हैं। साहित्यिक हलकों में जनसत्ता गंभीरता से लिया जाता है। कभी-कभी कुछ अक्षत-पुष्प चढ़ा देते हैं। कुछ पत्रिकाएँ अवश्य साहित्य धर्म का निर्वाह कर रही है। वागर्थ (प्रथम संपादक, प्रभाकर श्रेत्रिय) डॉ॰ बाबूलाल शर्मा द्वारा संपादित 'वैचारिकी' साहित्यिक शोध का एकमात्र त्रैमासिकी है। डॉ॰ मीरा सिन्हा द्वारा संपादित 'मुक्तांचल' साहित्य की अग्रणी त्रैमासिकी है। डॉ॰ शम्भुनाथ द्वारा सम्पादित 'समकालीन-सृजन मार्तण्ड' द्वारा सम्पादित 'साहित्य त्रिवेणी' अम्बुशर्मा द्वारा संपादित 'नैणसी' (17 वर्ष से नियत्रित) निर्भय देवयांश द्वारा सम्पादित 'लहक' और जितेन्द्र जितांशु द्वारा सम्पादित 'सदीनामा' जैसी कतिपय पत्रिकाएँ अवश्य साहित्य के उन्नयन और संवर्धन की दिशा में अग्रसर हैं।

अहिन्दी भाषियों का योगदान :-

(क) अंग्रेज :- बंगाल में आरम्भिक काल में अंग्रेजों का प्रमुख योगदान रहा है। गार्सा द ताप्सी ने जिसे हिन्दुई और गिल क्राइस्ट ने हिन्दुस्तानी नाम दिया फोर्ट विलियम कालेज के विलियम प्राइस ने उसे हिन्दी नाम दिया। बीसों ऐसे अंग्रेजों के नाम मिलते हैं जिन्होंने हिन्दी ग्रन्थों का अनुवाद अथवा सम्पादन किया। कुछ की चर्चा पहले की जा चुकी है। जान अब्राहीम ग्रियर्सन ने 'द माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर आफ हिन्दुस्तान लिखा जिसका 'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' नाम से किशोरीलाल गुप्त, ने अनुवाद किया। मैथ्यू टामस एडम ने 'गणित पुस्तक' हिन्दी कोश संग्रह और 'हिन्दी भाषा का व्याकरण' नामक ग्रन्थों की रचना की।

(ख) बंगाली तथा अन्य –

केशवचन्द्र सेन, राजा राम मोहन राय, महर्षि अरविन्द, कवीन्द्र रवीन्द्र, स्वामी विवेकानन्द, बंकिमचन्द्र,

शरतचन्द्र और भूदेव मुखोपाध्याय आदि हिन्दी के प्रबल समर्थक थे। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस और ईश्वरचन्द्र विद्यासागर हिन्दी में व्याख्यान देते थे। बंगदूत के सम्पादक नीलरतन हालदार थे। हिन्दी के प्रथम दैनिक 'समाचार सुधावर्षण' के सम्पादक श्यामसुन्दर सेन थे। हिन्दी बंगवासी के सम्पादक सम्पादकाचार्य पं॰ अमृतलाल चक्रवर्ती ने हिन्दी की सेवा में पूरा जीवन समर्पित कर दिया। 'धर्म प्रचारक' के सम्पादक कृष्ण प्रपन्न सेन थे। 'हिन्दी बंगवासी' का व्यय राजाराममोहन राय वहन करते थे। 'विशाल भारत' रामानन्द चट्टोपाध्याय का पत्र था। 'जस्टिस शारदाचरण मित्र ने' 'एक लिपि विस्तार परिषद' की स्थापना की और देवनागर (1907) पत्र निकाला। तारिणी चरण मित्र फोर्ट विलियम कालेज में भाषा मुंशी थे। इन्होंने 'नीति कथा' नाम से 'इशप्स फेबिल्स' का अनुवाद किया और 'हिन्दुस्तानी डिक्सनरी' में विलियम हंटर को सहयोग दिया। हिन्दी में लेखन, संपादन और अनुवाद के लिए अनेक बंगला, भाषियों के नाम मिलते हैं। नगेन्द्र वसु ने 24 खण्डों में 'हिन्दी विश्वकोश' का सम्पादन कर जो सराहनीय कार्य किया, वह भारतीय भाषाओं में आज भी अद्वितीय है। श्यामल भट्टाचार्य, जलज भादुड़ी सुब्रत लाहिड़ी, सोमा बंदोपाध्याय, अभिजित भट्टाचार्य आदि हिन्दी में लेखन कर रहे है। पंजाबीभाषा। डॉ॰ लखवीर सिंह निर्दोष, जगमोहन खोखर, डॉ॰ जसवीर सिंह चावला, रावेल पुष्प और भूपेन्द्र सिंह बसर हिन्दी में रचना कर रहे हैं। कन्नड़भाषा स्व॰ जी॰ कुमाख्या ने तो अकेले कन्नड़ के दो दर्जन ग्रन्थों का अनुवाद किया है।

हिन्दी भाषियों का योगदान :-

इस सुजला, सुफला और शस्य श्यामल बंग-भूमि पर उच्चस्तरीय हिन्दी साहित्य का सृजन हिन्दी भाषियों द्वारा ही हुआ है। ये मार्गदर्शक और अग्रणी भी रहे। हिन्दीभाषियों द्वारा प्रचुर साहित्य का सृजन हुआ और हो रहा है। इस लघु आलेख में नाम परिगणन संभव नहीं है। आचार्य कल्याणयल लोढ़ा ने ठीक ही कहा था कि बंगाल के हिन्दी साहित्यकारों की निर्देशिका बननी चाहिए।

साहित्यकार की प्रत्येक कृति की सार्थकता और उपादेयता होती है। डॉ॰ एस.आर. रंगनाथन ने कहा था कि 'हर पुस्तक का कोई पाठक होता है और हर पाठक को अपनी रुचि की कोई पुस्तक चाहिए' किन्तु साहित्यकार को उत्कृष्ट साहित्य के सृजन का प्रयास करना चाहिए क्योंकि काल का प्रभंजन थोथे उड़ा देता है। साहित्य ने सदा से जनमानस को अनुगामी बनाया किन्तु आज वह राजनीतिक विचारों और वादों का अनुगामी होकर एकांगी और पक्षपाती साहित्य के सृजन की ओर अग्रसर है। साहित्य का क्षेत्र विशाल है। उसका विस्तार पाताल लोभ से सत्यलोक तक है। आज साहित्यकार अल्प में ही सुखी है जबकि हमारे ऋषियों ने कहा था – भूया अर्थात् सम्पूर्ण में सुख है अल्प में नहीं – 'भूया वै सुखम् नाल्दे सुखम्' हंस के विवेक के जागने की प्रतीक्षा है।

सम्पादक मण्डल

उप-संपादक	: तितिक्षा तथा पापिया भट्टाचार्य
संपादकीय सलाहकार	: यदुनाथ सेउटा
संपादक	: जितेन्द्र जितांशु
विशेष सहयोग	: आरती चक्रवर्ती, एच॰ विश्ववाणी तथा राजेन्द्र कुमार रूईया (अमेरिका)

सभी अवैतनिक हैं।

पृष्ठ 1 का शेषांश

क्या आपको.....

की। उन्होंने बिना किसी संपार्श्विक प्रतिभूति के पंजाब नेशनल बैंक के अधिकारियों के साथ मिलीभगत कर बैंक से इस आशय का अधिकार पत्र हासिल कर लिया कि वे पंजाब नेशनल बैंक की गारंटी पर अन्य बैंकों से कर्ज ले सकते हैं। उनके मामा मेहुल चौकसी, जिन्हें नरेन्द्र मोदी प्रेम वश 'मेहुल भाई' पुकारते हैं, भी देश से भाग निकले हैं। उन्होंने और नीरव मोदी दोनों ने अपने सभी कर्मचारियों की छुट्टी कर दी है और भूख और बेरोजगार के गर्त में ढकेल दिया है। केवल ये दोनों ही ऐसे उद्योगपति नहीं है जो हमारे प्रधानमंत्री के प्रिय पात्र हैं। रोटोमेक पेन के मालिक श्री कोठारी ने भी बैंकों का खजाना खाली करने में अपना यथाशक्ति योगदान दिया है। यह बात अलग है कि अपवाद स्वरूप वे जेल के सींखचो के पीछे पहुँच गये हैं। इसके पहले भी कई उद्योगपति जनका का धन डकार कर देश से गायब हो चुके हैं। किंगफिशर के विजय माल्या, 9,000 करोड़ रूपये खाकर गायब हैं। सीबीआई ने देश के हवाई अड्डों को केवल यह नोटिस जारी किया कि अगर वे देश से बाहर जाने की कोशिश करें तो उसे सूचना दी जाए। देश की इस सबसे बड़ी जाँच एजेंसी ने यह नहीं कहा कि उन्हें देश के बाहर न जाने दिया जाए। इसके पहले, ललित मोदी भी यही फार्मूला अपना चुके हैं। उनके सुषमा स्वराज्य और वसुंधरा राजे सिंधिया से काफी मधुर सबंध बताए जाते हैं।

सन् 2004 के आम चुनाव के दौरान, श्री मोदी ने जो भी वायदे किये थे, उनमें से अधिकाधिक खोखले साबित हुए हैं। न तो विदेश में जमा काला धन वापस आया है और ना ही हर भारतीय के खाते में 15 लाख रुपये जमा हुए हैं। मँहगाई घटने की बजाय सुरसा के मुख की तरह बढ़ती जा रही है। मोदीजी ने यह वायदा भी किया था कि वे अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा बाजार में रूपये की कीमत बढ़ाने के लिए कदम उठाएँगे। इस सिलसिले में भी कुछ नहीं किया गया। देश की संपत्ति की चौकीदारी का वायदा भी अंततः जुमला सिद्ध हुआ। इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारी बैंकिंग प्रणाली में कई खामियाँ है और इन्हीं खामियों का इस्तेमाल मोदी के खास लोग अपने खजाने भरने के लिए कर रहे हैं। सवाल यह है कि ऐसे लोगों पर नजर रखने वाली प्रणाली क्यों और कैसे असफल हो गई। यह कैसे हुआ कि जनता की गाढ़ी कमाई के अरबों रूपये खाकर घोटालेबाज विदेशों में चैन की बंसी बजा रहे हैं। क्या यह उनकी चतुराई है या फिर मोदी सरकार ने उन्हें देश का धन गठरी में बांधकर विदेश भाग जाने का मौका उपलब्ध करवाया है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि मोदी इस देश के कारपोरेट घराने के प्रिय हैं। गुजरात में 2002 के कत्लेआम के बाद उन्होंने विकास का शिगूफा छोड़ा और उसे 'गुजरात मॉडल' का नाम दिया। इस माडल का मूल मंत्र था बड़े उद्योगपतियों को उनका मुनाफा और संपत्ति बढ़ाने के लिए ज्यादा से ज्यादा सुविधाएँ उपलब्ध करवाना। यही कारण है कि रतन टाटा ने नैनो कार का कारखाना पश्चिम बंगाल से हटाकर गुजरात में स्थापित किया और उन्होंने अन्य उद्योगपतियों से भी कहा कि अगर वे गुजरात में अपना धंधा नहीं चला रहे हैं तो वे सही रास्ते पर नहीं है। इसी तरह, अंबानी और अडानी ने भी मोदी राज में दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति की। नीरव मोदी इन औद्योगिक घरानों के नजदीक हो सकते हैं। शायद मोदी के लिए इन धन कुबेरों के प्रगति ही विकास है।

इसमें भी अधिक आश्चर्य की बात यह है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ अंतिम साँस तक लड़ने का प्रण करने वाले योद्धा गायब हैं। अन्ना हजारे, केजरीवाल, किरण बेदी और बाबा रामदेव को मानो साँप सूघ गया है। यहाँ यह बताना अप्रासंगिक नहीं होगा कि अन्ना हजारे के आन्दोलन की पूरी रणनीति विवेकानंद इंटरनेशनल सेंटर ने बनाई थी जो कि आरएसएस का थिंक टैंक है और इस आन्दोलन ने निश्चित तौर पर संघ की संतान भाजपा को दिल्ली में सत्ता में आने में मदद की।

कुल मिलाकर हमारा चौकीदार सोता रहा और नीरव मोदी और उनके जैसे अन्य लुटेरे सरकारी खजाने पर डाका डालकर विदेश में जा छिपे। अब सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के निजीकरण की बात कही जा रही है। क्या निजीकरण के बाद जो लोग इन बैंकों का संचालन करेंगे उन पर हम यह भरोसा कर सकते हैं कि वे उस धन की रक्षा करेंगे, जो जनता उन्हें सौंपेगी? इस समय जरूरत इस बात है कि जनता के धन के उपयोग का सामाजिक ऑडिट हो और उस पर जनता का नियंत्रण हो। अब इसमें कोई संदेह नहीं रह गया है कि मोदी, कारपोरेट जगत के प्रति काफी प्रेम भाव रखते हैं। अगर हम अब भी नहीं जागे तो बहुत देर हो जाएगी।

रामपुनियानी

ram.puniyani@gmail.com

अंग्रेजी से हिन्दी रूपातरण अमरीश हरदेनिया

रक्षा उत्पादन में निजीकरण के खिलाफ कांग्रेसी, वामपंथी तथा भाजपाई रक्षा महासंघों का संयुक्त विरोध प्रदर्शन

–नित्यानंद गायेन, नई दिल्ली, स. डीकेएस

15 फरवरी को दिल्ली के संसद मार्ग पर देश की रक्षा उत्पादन संस्थाओं के निजीकरण के विरोध में रक्षा कर्मचारियों के तीन महासंघों आईएनडीडब्ल्यूएफ, वीपीएसएस तथा एआईडीईएफ ने एक दिवसीय विरोध प्रदर्शन किया।

तीन महासंघों का कहना है कि मोदी सरकार के इस निजीकरण के फैसले से जहाँ देश की सुरक्षा खतरे में पड़ जाएगी वहीं इन संस्थाओं से जुड़े लगभग तीस हजार कर्मचारी भी बेरोजगार हो जाएँगे।

प्रदर्शन को संबोधित करते हुए सरदार जसबीर सिंह सिद्धू ने कहा कि मोदी सरकार को देश की चिन्ता नहीं है, उसकी चिन्ता है कि देश के निजी उद्योगपति कैसे सुरक्षित रहें और ज्यादा मुनाफा कमाएं। उन्होनें कहा – हम मोदी सरकार द्वारा देश की रक्षा के साथ उत्पादन संस्थानों के निजीकरण के इस फैसले का विरोध और निन्दा करते हैं।

प्रदर्शन स्थल पर उपस्थित आईएनडीडब्लूएफ के महासचिव आर श्रीनिवासन ने दिल्ली की सेल्फी को बताया कि मोदी सरकार द्वारा लिया गया यह फैसला देश की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ है और इससे रक्षा उत्पादन से जुड़े हुए लगभग 30 हजार कर्मचारी बेरोजगार हो जाएंगे। उन्होंने कहा – एक तरफ तो मोदी सरकार देश की रक्षा और जवानों की सम्मान की बात करती है वहीं दूसरी तरफ रक्षा उत्पादन से जुड़ी संस्थाओं का निजीकरण करने पर लगी हुई है। आर श्रीनिवासन ने कहा कि – 'हमने इस मसले पर रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण को एक पत्र लिखा है और हमारा एक प्रतिनिधि मंडल उनसे मिलना चाहता था पर हमें समय नहीं दिया उन्होंने।'

इस एक दिवसीय विरोध प्रदर्शन में आए लोग नारा लगा रहे थे - 'निजीकरण नहीं चलेगा - नहीं चलेगा।

इनकी मुख्य मांगे थी –

- बीस हजार कर्मचारियों को कार्पल्स घोषित करने से रोकना।
- 143 तथा 93 नॉन कोर उत्पादों पर फैसला तुरंत वापस लेना।
- आर्मी बेस वर्कशाप में गोको मॉडल को वापस लेना।
- रक्षा उत्पादों के लिए आउट सोर्स बंद करना।
- डीआरडीओ को मजबूत कना तथा इसकी किसी भी तकनीकी को किसी निजी कम्पनी को देने पर रोक लगाना।
- डीजीक्यू से किसी भी कर्मचारी को नहीं हटाना और भविष्य की योजनाओं में आयुध निर्माणियों को शामिल करना आदि शामिल हैं।

गौरतलब है कि इस विरोध प्रदर्शन में भाजपा से सम्बन्धित रक्षा कर्मचारी महासंघ बीपीएमएस भी शामिल था। इस प्रदर्शन में देश भर से आए सैकड़ों आयुध कर्मचारी शामिल हुए। मंच पर तीनों महासंघों के महासचिव उपस्थित थे जिनमें एआईडीईएफ के महासचिव सी श्रीकुमार ने दिल्ली की सेल्फी को बताया कि सरकार के इस निजीकरण के फैसले से जहाँ देश की सुरक्षा को खतरा है वहीं रक्षा उत्पाद से जुड़े कई सरकारी संस्थान भी पूरी तरह से बंद हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने सैनिकों की वर्दी के लिए अब से 10 हजार रूपये देने का फैसला लिया है और कहा है कि वे जहाँ से चाहे वहाँ से वर्दी खरीद लें।

इसमें देश भर से हजारों कर्मचारियों ने भाग लिया। भाजपा, कांग्रेस एवं वामपंथी सभी श्रमिक संगठनों के प्रतिनिधि थे। सी॰ श्रीकुमार (महासचिव, आईडीईएफ), आर॰ श्रीनिवासन (महासचिव-आइएनडीडब्ल्यूएफ) तथा एम पी सिंह (महासचिव - बी. पी. एम.एस) ने प्रपत्र पर हस्ताक्षर किये। तीनों महासंघों के प्रेसिडेंट व उनके प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। अशोक सिंह (प्रेसिडेन्ट - आईएनडी डब्ल्युएफ), हरभजन सिंह (एचएमएस), एसएन पाठक (प्रेसिडेन्ट-एआईडीईएफ), वीपीएम के नरेन्द्र तिवारी, मुकेश सिंह, साधू सिंह, काजल घोष कांग्रेस महासंघ के एच एन तिवारी, गुरुदयाल सिंह, सुभाष चन्द्र नाहाटा, दमदम आर्डनेन्स फैक्ट्री की तृणमूल युनियन के चार

बज बज की कोयला सड़क के वाशिन्दों ने कौमी एकता के लिए करायी,

कवि सम्मेलन और मुशायरा की एक शाम, सूफियन प्रतापगढ़ी और वली रहमानी के नाम

25 फरवरी 2018 को कोलकाता के उप नगर बज बज के जनता स्कूल (हाई स्कूल) के प्रांगण में कोयला सड़क के वाशिंदों ने कौमी एकता के लिए कवि सम्मेलन और मुशायरा आयोजित कराया तथा सूफियन प्रतापगढ़ी को सुनने के अलावा वली रहमानी की कौमी एकता पर तकरीर को भी जनता तक पहुँचाने की कोशिश की। 25 की शाम को रात नौ बजे शुरु हुआ यह कार्यक्रम देर रात तक चला। मुशायरे की अध्यक्षता कर रहे थे अकबर हुसैन अकबर, संचालन कर रहे थे जमीर युसूफ और जितेन्द्र जितांशु। वहशी हवरवी, इरशाद आरजू, उरषा आरसी,नसीम फैक, सोहेल खान खान, बुशरा शहर, अशरफ याकूबी, जमीर युसुफ, मो॰ मुकीम, शमा अफरोज, रेहाना नबाब, परवेज अख्तर, असलम लखनवी, शहनाज रहमत, इरशाद मजहरी, जितेन्द्र जितांशु आदि ने अपनी रचनाएँ पढ़ी।

मुशायरे का आकर्षण रहा सूफियान प्रतापगढ़ी का कविता पाठ जिसे दो बार सुना गया।

कार्यक्रम की खासियत थी, स्टेज पर तस्वीरें जो सजायी गयीं थीं - रवीन्द्रनाथ टैगोर, नजरुल, मो॰ इकबाल, पं॰ राम प्रसाद बिस्मिल, गालिब और अनवर जलालपुरी।

कार्यक्रम का एक और आकर्षण रहा वली रहमानी की तकरीर, वली रहमानी की उम्र मात्र 20 वर्ष है वे आज 10 बच्चों के गार्जियन हैं, जल्दी ही

उनके दस हजार बच्चे होंगे वे 2040 तक मुल्क के वजीरेआलम बनने का ख्वाब रखते हैं। उन्होंने अपनी तकरीर में बनाया कि अयोध्या में अंग्रेजों ने दो लोगों को एक ही फांसी के फंदे से लटकाया था, एक हिन्दू था दूसरा मुसलमान। यह रपट वेदान्त सांगानेरिया ने लिखी।

प्रकाशन प्रभार

राजेश्वर राय • मीनाक्षी सांगानेरिया • मारिया शमीम • रमेश कुमार

पत्राचार का पता :

सम्पादक - सदीनामा
48/49A, Swiss Park, Kolkata-700 033
West Bengal, India ☎ : 9231845289
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

शोक सभा

कोलकाता के उपनगर बज बज की सर्वोदय पुस्तकालय समिति के सह सचिव सुरेन्द्र सिंह की शोक सभा समिति के प्रांगण में 10 मार्च को सम्पन्न हुई। वे 53 वर्ष के थे। अचानक बीमारी से 28 फरवरी को नई दिल्ली में उनकी मौत हो गई। वे अपने पीछे अपनी पत्नी उषा सिंह, बड़ी पुत्री प्रिति सिंह, छोटी रितु सिंह पुत्र विनीत सिंह, दामाद अविनाष सिंह, सुरेन्द्र सिंह बहुत ही मिलनसार एवं सामाजिक व्यक्तितत्व थे। यह रपट पुस्तकालय का काम देखनेवाले, उमेश राय ने दी। शोक सभा में रामाधीन गुप्ता अभिनाष सिंह, जितेन्द्र जितांशु प्रीति सिंह, बहादुर सिंह, मुन्ना सिंह, तारकेश्वर सिंह तथा अन्य ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। यह रपट पुस्तकालय का काम देखने वाले उमेश राय ने दी।

ISSN : 2454-2121
R.N. No. WBHIN/2000/1974
Central Govt. Postal Regd. No. TECH/WB/RNP/SP-003/2014-16

1 से 31 मार्च
कुल पेज : 28

मूल्य : 5.00
सदीनामा
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

हमारी बेबसाइट :

www.sadinama.in

इस अंक को इंटरनेट पर पढ़ें

अब आर्थिक सहयोग देना हुआ और आसान सहयोगकर्ताओं की सूची प्रतिमाह प्रकाशित होती है

SADINAMA

Current Account No. 03771100200213
PUNJAB AND SIND BANK
IFSC CODE : PSIB0000377
Bhawanipore Branch, Kolkata (West Bengal)
SMS to Inform - 09231845289
PLZ SMS WITH YOUR FULL POSTAL ADDRESS & Transaction No. & Date

With best compliments from :

GOLDEN
Machinex Corporation

Regd. Office : 194/3, G.T. Road (North) Salkia
Howrah-711 106, West Bengal
Ph : 2655-7582, 2655-7835
Fax : (91) (033) 2655-7835/2211-5035

Showroom : 7, Ganesh Chandra Avenue
Kolkata- 700013
Ph. : 2237-2835, 2237-8896

Website : www. goldenmachinery.com

E-mail : mail@goldenmachinery.com

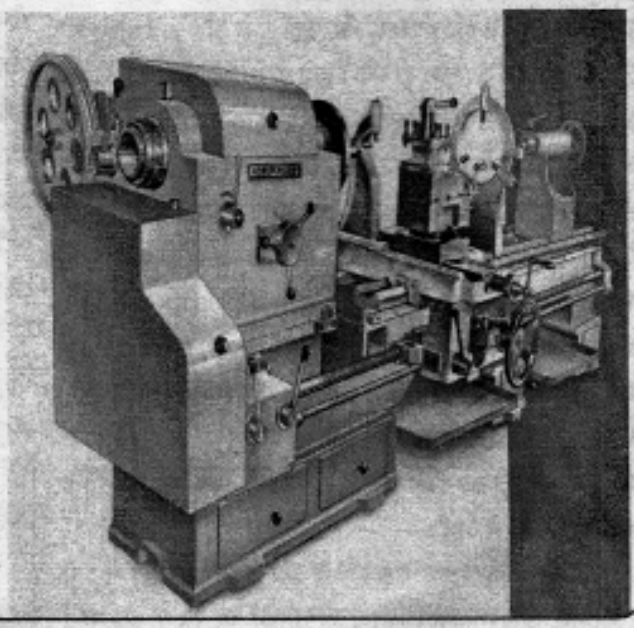

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी सोनिया शर्मा द्वारा डायमंड आर्ट प्रेस, 37ए, बैंटिक स्ट्रीट, कोलकाता-69 से मुद्रित तथा
H-5, Govt. Qtrs. Budge Budge (बजबज), **Kolkata-700137, 24Pgs(S). W.B. India** प्रकाशित।
संपादक : जितेन्द्र जितांशु, 9231845289, **E-mail : jjitanshu@yahoo.co.in R.N.1 No. WBHIN/2000/1974**